thearyasamaj.org

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - २२ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र नवम्बर (द्वितीय) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

ऋषि मेले की झलकियाँ

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : २२
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

नवम्बर द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. आदर्श संन्यासी - स्वामी विवेकानन्द	सम्पादकीय	०४
२. चित्तमेकाग्रं कथन्न भवति	स्वामी विष्वङ्	०८
३. आर्यों का महाकुम्भ	सत्येन्द्र सिंह आर्य	१२
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	२०
५. मेरे गुरुवर (२)	आचार्य प्रदीप कुमार	२५
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२९
७. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	३१
८. जिज्ञासा समाधान-७५	आचार्य सोमदेव	३२
९. सांख्ययोग व भक्तियोग	आचार्य प्रद्युम्न	३६
१०. संस्था-समाचार		३८
१०. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुननें हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

आदर्श संन्यासी - स्वामी विवेकानन्द

दिनांक २३ अक्टूबर २०१४ को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में प्रतिवर्ष की भांति आर्यसमाज की ओर से महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह मनाया गया। इस अवसर पर भूतपूर्व सेनाध्यक्ष वी.के. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित थे। उन्होंने श्रद्धाञ्जलि देते हुए जिन वाक्यों का प्रयोग किया वे श्रद्धाञ्जलि कम उनकी अज्ञानता के प्रतीक अधिक थे। वी.के. सिंह ने अपने भाषण में कहा- 'इस देश के महापुरुषों में पहला स्थान स्वामी विवेकानन्द का है तथा दूसरा स्थान स्वामी दयानन्द का है।' यह वाक्य वक्ता की अज्ञानता के साथ अशिष्टता का भी द्योतक है। सामान्य रूप से महापुरुषों की तुलना नहीं की जाती। विशेष रूप से जिस मञ्च पर आपको बुलाया गया है, उस मञ्च पर तुलना करने की आवश्यकता पड़े भी तो अच्छाई के पक्ष की तुलना की जाती है। छोटे-बड़े के रूप में नहीं की जाती। यदि तुलना करनी है तो फिर यथार्थ व तथ्यों की दृष्टि में तुलना करना न्याय संगत होगा।

श्री वी.के. सिंह ने जो कुछ कहा उसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाता, आने वाला व्यक्ति जो जानता है, वही कहता है। यह आयोजकों का दायित्व है कि वे देखें कि बुलाये गये व्यक्ति के विचार क्या है। यदि भिन्न भी है तो उनके भाषण के बाद उनकी उपस्थिति में शिष्ट शब्दों में उनकी बातों का उत्तर दिया जाना चाहिए, ऐसा न कर पाना संगठन के लिए लज्जाजनक है। इसी प्रसंग में स्वामी विवेकानन्द के जीवन के कुछ तथ्य वी.के. सिंह की जानकारी के लिए प्रस्तुत है।

- सम्पादक

भारतवर्ष में संन्यास संसार को छोड़ने का और मोह से छूटने का नाम है। स्वामी विवेकानन्द न संसार छोड़ पाये, न मोह से छूट पाये। इसलिए वे सारे जीवन घर और घाट की अजीब खींचतान में पड़े रहे। (वही पृष्ठ २)

अपने किसी प्रियजन का मृत्यु संवाद पाकर संन्यासी विवेकानन्द को रोता देखकर किसी ने मन्तव्य दिया- 'संन्यासी के लिए किसी की मृत्यु पर शोक प्रकाशित करना अनुचित है'

विवेकानन्द ने उत्तर दिया 'यह आप कैसी बात करते हैं? संन्यासी हूँ इसलिए क्या मैं अपने हृदय का विसर्जन दे दूँ। सच्चे संन्यासी का हृदय तो आप लोगों के हृदय के मुकाबले और अधिक कोमल होना चाहिए। हज़ार हो, हम सब आखिर इंसान ही तो हैं।' अगले ही पल, उनकी अचिन्तनीय अग्निवर्षा हुई, 'जो संन्यास दिल को पत्थर कर लेने का उपदेश देता है, मैं उस संन्यास को नहीं मानता।' (वही पृ. २)

'जो व्यक्ति बिलकुल सच्चे-सच्चे मन से अपनी माँ की पूजा नहीं कर पाता, वह कभी महान नहीं हो सकता।' (वही पृ. ३)

इसके लिए स्वामी विवेकानन्द ने शंकराचार्य और चैतन्य का उदाहरण दिया। (वही पृ. ३)

मैं अति नाकारा सन्तान हूँ। अपनी माँ के लिए कुछ भी नहीं कर पाया। उन लोगों ने जाने को कहा तो बहा कर चला आया। (वही पृ. ७)

'सोने जैसे परिवार का सोना बेटा नरेन्द्र नाथ लगभग एक ही समय में दो-दो प्रबल भँवर में फंस गया था। पहला भँवर था- आध्यात्मिक जगत् में विपुल आलोड़न दक्षिणेश्वर के श्री रामकृष्ण से साक्षात्कार। दूसरा भँवर था- पिता विश्वनाथ की आकस्मिक मौत से पारिवारिक विपर्यय। यह एक ऐसी परिस्थिति थी, जब इक्कीस वर्षीय वकालत दां, बड़े बेटे के अलावा कमाने लायक और कोई भी नहीं था।' (वही पृ. २०)

'पिता की मृत्यु के साल भर बाद सन् १८८५ में मार्च महीने में नरेन्द्रनाथ ने घर छोड़ देने का फैसला ले लिया था, ऐसा हम अन्दाजा लगा सकते हैं। यही सब वृत्तान्त पढ़कर आलोचकों ने मौके का फायदा उठाते हुए एक टेढ़ा सा सवाल जड़ दिया- स्वामी जी अभाव संन्यासी थे या स्वभाव संन्यासी।' (वही पृ. २६)

अब घर से उनका कोई खास सरोकार नहीं रहा। हाँ, जब वे कलकत्ता में होते थे तो कभी-कभार माँ से मिलने चले आते थे। सन् १८९७ में यूरोप से लौटने के पहले तक घर में किसी ने उन्हें गेरुआ वस्त्र में नहीं देखा। (वही पृ. ४१)

'इस प्रसंग में वेणीशंकर शर्मा ने कहा है- जो कुछ परिवार से जुड़ा है, वह निन्दनीय या वर्जनीय है, ऐसा उनका मनोभाव नहीं था। मातृभक्ति को उन्होंने संन्यास की वेदी पर बलि नहीं दी, बल्कि हम तो यह देखते हैं कि वे माँ के लिए उच्चाकांक्षा, नेतृत्व, यश, सब कुछ का विसर्जन

thearyasamaj.org

देने को तैयार थे।' (वही पृ. ४५)

'वेणीशंकर शर्मा की राय है- ऐसा लगता है स्वामी जी को अमेरिका भेजने का जो खर्चीला संकल्प महाराज ने ग्रहण किया था, उसमें स्वामी जी की माँ और भाइयों के लिए सौ रुपये महीने का खर्च भी शामिल था। महाराज ने सोचा कि स्वामी जी को अपनी माँ और भाइयों की दुश्चिन्ता से मुक्त करके भेजना ही, उनका कर्त्तव्य है।' (वही पृ. ४६)

'खेतड़ी महाराज को पत्र (१७ सितम्बर १८९८) भेजा मुझे रुपयों की जरूरत है, मेरे अमेरिकी दोस्तों ने यथासाध्य मेरी मदद की है, लेकिन हर वक्त हाथ फैलाने में लाज आती है, खासतौर पर इस वजह से कि बीमार होने का मतलब ही है- एक मुश्त खर्च। दुनिया में सिर्फ एक ही इंसान है, जिससे भीख माँगते हुए मुझे शर्म या संकोच नहीं होता और वह इंसान है आप। आप दें या न दें, मेरे लिए दोनों बराबर हैं। अगर सम्भव हो तो मेहरबानी करके, मुझे कुछ रुपये भेज दें।' (वही पृ. ५५)

'मैं क्या चाहता हूँ, उसका विशद विवरण मैं लिख चुका हूँ। कलकत्ता में एक छोटा सा घर बनाने पर खर्च आएगा दस हजार रुपये। इतने रुपयों से चार-पाँच जन के रहने लायक छोटा सा घर किसी तरह खरीदा या बनवाया जा सकता है। घर खर्च के लिए आप जो मेरी माँ को हर महीने सौ रुपये भेजते हैं, वह उनके लिए पर्याप्त है। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, आप मेरे खर्च के लिए अगर और सौ रुपये भेज सकें, तो मुझे बेहद खुशी होगी। बिमारी की वजह से मेरा खर्च भयङ्कर बढ़ गया है। वैसे यह अतिरिक्त बोझ आपको ज्यादा दिनों तक वहन करना होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता, क्योंकि मैं हद से हद और दो-एक वर्ष जिन्दा रहूँगा। मैं एक और भीख भी माँगता हूँ- माँ के लिए आप जो हर महीने सौ रुपये भेजते हैं, अगर हो सके तो उसे स्थायी रखें। मेरी मौत के बाद भी यह मदद उनके पास पहुँचती रहे। अगर किसी कारणवश मेरे प्रति अपने प्यार या दान में विराम लगाना पड़े तो एक अकिञ्चन साधु के प्रति कभी प्रेम प्रीति रही है, यह बात याद रखते हुए, महाराज इस साधु की दुखियारी माँ पर यह करुणा बरसाते रहें।' (वही पृ. ५६)

'उन्होंने अपनी यह इच्छा भी बताई कि अब वे अपने जीवन के बचे-खुचे दिन अपनी माँ के साथ बितायेंगे। उन्होंने कहा- 'देखा नहीं, इस बार बीच में आपदा है- प्रकृत वैराग्य! अगर सम्भव होता तो मैं अपने अतीत का खण्डन करता, अगर मेरी उम्र दस वर्ष कम होती, तो मैं विवाह करता। वह भी अपनी माँ को खुश करने के लिए, किसी अन्य कारण से नहीं। उफ! किस बेसुधी में मैंने ये कुछ साल गुजार दिये, उच्चाशा के पागलपन में था'... अगले ही पल वे अचानक अपने समर्थन में कह उठे, 'मैं कभी भी उच्चाभिलाषी नहीं था। ख्याति का बोध मुझ पर लाद दिया गया था।' निवेदिता ने कहा, ख्याति की क्षुद्रता आप में कभी नहीं थी। लेकिन मैं बेहद खुश हूँ कि आपकी उम्र दस वर्ष कम नहीं है।' (वही पृ. ५७)

'विश्वविजय कर कलकत्ता लौट आने के बाद (१८९७) स्वामी जी का माँ से मिलने जाने का हर दृश्य भी अंकित है। -पेट्रियट, ओरेटर, सेंट कहाँ गुम हो गया। वे दुबारा अपनी माँ के गोद के नन्हे से लल्ला बन गये। माँ की गोद में सिर रखकर, असहाय शरारती शिशु की तरह वे रोने लगे- माँ-माँ अपने हाथों से खिलाकर, मुझे इंसान बनाओ। (वही पृ. ६१)

'अगले सप्ताह मैं अपनी माँ को लेकर तीर्थ पर जा रहा हूँ। तीर्थ-यात्रा पूरी करने में कई महीने लग जायेंगे। तीर्थ-दर्शन हिन्दू-विधवाओं की अन्तरंग साध होती है। जीवन भर मैंने अपने आत्मीय स्वजनों को केवल दु:ख ही दिया। मैं उन लोगों की कम से कम एक इच्छा पूरी करने की कोशिश कर रहा हूँ।' (वही पृ. ६४)

स्वामी त्रिगुणातीतानन्द ने यह भी जानकारी दी है- 'उनकी दोनों बाहें और हाथ किसी औरत की बाहों की तुलना में खूबसूरत थे।' (वही पृ. १४९)

'स्वामी जी के घने बालों के ऐश्वर्य के बारे में उनकी कई-कई तस्वीरों से हमारी धारणा बनती है- घुंघराले नहीं, लहर-लहर घने बालों का अरण्य। उनके घने काले बालों का छोटा-सा गुच्छा अचानक ही मिस जोसेफिन मेक्लाइड ने एक बार काट लिया था और वे परेशान हो उठे थे। बालों का वह गुच्छा मिस मेक्लाइड अपने जेवर के डिब्बे में संजोकर हमेशा अपने पास रखती थी। स्वदेश लौटकर बेलुड़ मठ में अपना सिर मुंडाते हुए भी स्वामी जी ने अपने बालों को लेकर खूब-खूब हंसी-ठट्ठा किया था। ऐसे खूबसूरत बाल जो विदेश में भाषण देते हुए माथे पर झूलकर आँखों को ढक लेते थे, स्वदेश लौटकर उन्होंने काट फेंका।

'हम जानते हैं कि बेलुड़ मठ में वे हर महीने बाल मुंडवा लेते थे। बेलुड़ मठ में उनके बाल मूंडकर नाई उन्हें समेट कर फेंकने ही जा रहा था कि स्वामी जी ने हंसकर मन्तव्य किया। अरे देख क्या रहा है? इसके बाद तो

thearyasamaj.org

विवेकानन्द के गुच्छे भर बालों के लिए, दुनिया में 'क्लैमर' मच जाएगा।'

नरेन्द्र के अंग-प्रत्यंग के बारे में जब मैं ढेरों तथ्य जमा कर रहा हूँ, तब यह भी बता दूँ कि उनकी 'टैम्परिंग फिंगर' थी, बंगला में महेन्द्रनाथ दत्त ने जिन उंगलियों को 'चंपे की कली' कहा है, इस किस्म की उंगलियाँ दुविधा शून्य, निश्चयात्मक मानसिकता का संकेत देती हैं। उनके नाखून ईषत् रक्ताभ थे और नाखून का ऊपरी हिस्सा ईषत् अर्धचन्द्राकार। संस्कृत में इस किस्म के दुर्लभ नाखूनों को 'नखमणि' कहते हैं।

महेन्द्रनाथ अपने बड़े भाई के पदचाप के बारे में भी संकेत दे गये हैं- 'उनके कदमों की गति न ज्यादा तेज थी, न ज्यादा धीमी, मानो गम्भीर चिन्तन में निमग्न रहकर, विजयाकांक्षा में अतिदृढ़, सुनिश्चित ढंग से, धरती पर कदम रखकर चलते थे।'

'भाषण देते समय विवेकानन्द अपने हाथ की उंगलियाँ पहले कसकर अचानक फैला देते थे। उनके मन में जैसे-जैसे भाव संचरित होते थे, उंगलियों का संचरण भी तदनुसार होता रहता था। उनके अवयव के जिस हिस्से को लेकर देश-विदेश के भक्तों में कहीं कोई मतभेद नहीं है, वह है स्वामी जी की आँखें। जो लोग भी उनके करीब आये, सभी उनकी मोहक, राजीवलोचन आँखों के जयगान में मुखर हो उठे।' (वही पृ. १५०)

वेरी लार्ज एण्ड ब्रिलिएंट- तमाम अखबारों और विभिन्न संस्मरणों में बार-बार यह बात घूम-फिरकर आई है। उनकी आँखों के बारे में अंग्रेजी के और भी कई दुर्लभ शब्दों का प्रयोग हुआ है- 'फ्लोइंग, ग्रेसफुल, ब्राइट, रेडिएंट, फाइन, फुल ऑफ फ्लैशिंग लाइट'। आलोचकों ने प्रकारान्तर से उनकी आँखों पर कीचड़ उछालने की व्यर्थ कोशिश में अमेरिका में अफवाह फैलाई- अमेरिकी महिलाएँ उनके आदर्श की ओर आकृष्ट होकर पतंग की तरह दौड़ी हुई नहीं आतीं, वे लोग उनके नयन-कमल की चुम्बकीय शक्ति की ओर खिंची चली आती हैं। (वही पृ. १५१)

इन्दौर की घटना है। पत्रकार वेदप्रताप वैदिक के पिता श्री जगदीश प्रसाद वैदिक इन्दौर के एक विधायक की चर्चा कर रहे थे। वैदिक जी ने विधायक से कहा- शंकरसिंह! तू किसी सिद्धान्त का पालन नहीं करता, अपने को आर्यसमाजी कहता है। यह अनुचित है। विधायक बोला पं. जी मैं पाड़े आर्यसमाजी हूँ, मैं निराकार ईश्वर को मानता हूँ। आर्य समाज के सिद्धान्तों को मानता हूँ, ऋषि दयानन्द में मेरी निष्ठा है, मैं उनको अपना गुरु मानता हूँ। वैदिक जी विधायक से बोले- शंकर तुम मांस खाते हो, शराब पीते हो, अन्य व्यसन करते हो, फिर आर्यसमाजी कैसे हो? शंकर बोला मेरी सिद्धान्तों में निष्ठा है इसलिये आर्यसमाजी हूँ। खाता-पीता हूँ कह सकते हो, मैं बिगड़ा हुआ आर्यसमाजी हूँ। स्वामी विवेकानन्द के संन्यास के विषय में भी यही कहा जा सकता है। हैं तो वे संन्यासी उनकी संन्यास में आस्था है, परन्तु व्यवहार में संन्यास दूर तक भी दिखाई नहीं देता।

स्वामी विवेकानन्द के संन्यासी जीवन को व्यवहार के धरातल पर देखा जाय तो एक वाक्य में कहा जा सकता है- उनका जीवन मछली से प्रारम्भ होता है और मछली पर आकर समाप्त हो जाता है।

किसी भी व्यक्ति के संन्यासी होने की सर्वमान्य कसौटी है यम-नियमों में आस्था रखना, उनका पालन करना, उनके पालन का उपदेश करना, क्योंकि इनके पालन करने से ही मनुष्य के व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन की उन्नति होती है और यदि कोई कहता है कि यम-नियमों का पालन न करके, उनके विपरीत आचरण करके कोई संन्यासी महान् बनता है तो इस से बड़ी मूर्खता और नहीं हो सकती। यम-नियमों में पाँच यम- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह तथा पाँच नियम- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान हैं। ये दस संन्यास की आवश्यक बाते हैं। यदि कोई इनका निषेध करके अपने को संन्यासी मानता है, वह मर्यादा से पतित ही कहा जा सकता है। संन्यास, योग, समाधि जैसी बातों में अहिंसा का सर्वोपरि स्थान है, परन्तु विवेकानन्द के जीवन में अहिंसा के लिए कोई स्थान नहीं। जो मनुष्य अपने भोजन और जिह्वा के स्वाद के लिए प्राणि-हिंसा का समर्थन करता हो, वह व्यक्ति योग और संन्यास के पथ का पथिक नहीं बन सकता। स्वामी विवेकानन्द को मांसाहार कितना प्रिय था और वे इसके लिए कितने आग्रही थे, इस बात को उनके जीवन में आई निम्न घटनाओं को देखकर परिणाम निकाला जा सकता है-

''खाने-पीने के बारे में, बड़े होकर मंझले भाई के नाश्ते की ही बात लें। उन दिनों कलकत्ता की दुकानों में पाड़े के मुण्ड बिका करते थे। दोनों भाई नरेन्द्र और महेन्द्र ने पाड़े वाले से मिलकर पक्का इन्तजाम कर लिया था। दो-चार आने में ही पाड़े के दस-बारह मुंड जुटा लिए जाते थे। दस-बारह सिर और करीब दो-ढाई सेर हरे मटर एक संग

thearyasamaj.org

उबाल कर सालन पकाया जाता था। महेन्द्र ने लिखा है- शाम को मैं और स्वामी जी स्कूल से लौटकर वो सालन और करीब सोलह रोटियाँ नाश्ते में हजम कर जाते थे।'' (विवेकानन्द, जीवन के अनजाने सच, पृ. १३)

'दादा नरेन काफी कम उम्र में सुघंनी लेने लगे थे और उसकी गन्ध मसहरी के अन्दर से आती रहती थी, यह बात उनके मंझले भाई महेन्द्रनाथ हमें बता चुके हैं। कबूतर उड़ाने का उन्हें खानदानी शौक था।' (वही पृ. १७)

'एक बार वे भाई, दादा और माँ-पिता के साथ रायपुर जा रहे थे। महेन्द्रनाथ ने जानकारी दी है कि घोड़ातला में मांस पकाया गया। मैं खाने को राजी नहीं था। बड़े भाई ने मेरे मुंह में मांस का टुकड़ा ठूंस दिया और मेरी पीठ पर धौल जमाने लगे- खा, खा, ले खा, उसके बाद और क्या? शेर के मुंह को खून का स्वाद लग गया।' (वही पृ. १८)

''मास्टर साहब ने पूछा 'तुम्हारी माँ ने कुछ कहा?' नरेन्द्र ने उत्तर दिया- 'नहीं। वे खाना खिलाने के लिए उतावली हो उठीं। हिरण का मांस था, खा लिया। लेकिन खाने का मन नहीं था।'' (वही पृ. २८)

'दत्त लोगों की मेधा के प्रसंग में और एक सरल कथा भी है। मंझले भाई महेन्द्रनाथ से निरञ्जन महाराज ने एक बार कहा था। नरेन में इतनी बुद्धि क्यों भरी है, जानता है? नरेन बहुत ज्यादा हुक्का गुड़गुड़ा सकता है। अरे हुक्का न गुड़गुड़ाया जाय, तो क्या बुद्धि अन्दर से बाहर निकल सकती है....। तुम भी तमाखू पीना सीखो। नरेन की तरह तुम्हारी भी बुद्धि खुल जायेगी।' (वही पृ. ४२)

'यानि माँ की सारी समस्याओं के समाधान के लिए अपनी भरसक कोशिश करते रहे, उनके संसार-वीतरागी ज्येष्ठ पुत्र! जाने से पहले माँ की इच्छा और अपना वचन करने के लिए, उन्होंने सिर्फ तीर्थ-यात्रा ही नहीं की, बल्कि कालीघाट में बलि तक दे डाली। उनके निधन के बाद भी माँ को कोई तकलीफ न हो, इसके लिए वे अपने गुरु भाइयों से सादर अनुरोध कर गये थे।' (वही पृ. ७१)

'रसगुल्ला प्रसंग में हेडमास्टर सुधांशु शेखर भट्टाचार्य जी ने सीधे-सीधे बल्लेबाजी की थी।' सुन, विवेकानन्द मिठाई खाने वाले जीव थे ही नहीं, वे जो खाना पसन्द करते थे, अगर उसका इन्तजाम किया जाता तो तुम सब की आँखों में आँसू आने के अलावा और कुछ नहीं बचेगा। उस चीज का नाम था-मिर्च। (वही पृ. ७६)

'उन्हें खबर मिल चुकी थी कि कामिनी-कंचन का परित्याग जरूरी होते हुए भी रामकृष्ण मठ-मिशन में भोजन के बारे में कोई बाधा-निषेध नहीं है।' (वही पृ. ७७)

'दुनिया भर में एकमात्र वही ऐसे भारतीय थे, जो सात सागर पार करके अमेरिका पहुँचे और वहाँ वेदान्त और बिरयानी दोनों का एक साथ प्रचार करने का दुस्साहस दिखाया।' (वही पृ. ७७)

'इसी दौर में नरेन्द्रनाथ का सफलतम आविष्कार था- बत्तख के अण्डे को खूब फेटकर, हरी मटर और आलू डालकर भुनी हुई खिचड़ी। गीली-गीली खिचड़ी के बजाय यह व्यञ्जन-विधि कहीं ज्यादा उपयोगी है, यह बात कई सालों बाद विशेषज्ञों ने स्वीकार की है। उनके पिता गीली खिचड़ी और कलिया पकाते थे और उनके सुयोग्य बेटे ने एक कदम और आगे बढ़कर और एक नई डिश के जरिये पूर्व-पश्चिम को एकाकार कर दिया।' (वही पृ. ८३)

'बाद में महेन्द्रनाथ ने लिखा- मैं वह सब खाने को कतई तैयार नहीं था। मुझे उबकाई आने लगी। बड़े भैया ने मेरे मुंह में मांस ठूंसकर, मुक्के-मुक्के से मेरी धुनाई की और कहता रहा- खा! खा! उसके बाद फिर क्या था? बाघ को जैसे खून का नया-नया स्वाद मिल गया और क्या।' (वही पृ. ८३)

पटला दादा ने कहा- 'ले, तू नोट कर। इंसानों के प्रति प्यार, गर्म चाय, खुशबूदार तम्बाकू और दिमाग खराब कर देने वाली मिर्च- इन चार मामलों में विवेकानन्द सीमाहीन थे।' (वही पृ. ८६)

'एक बार होटल में खाकर जब वे ठाकुर के यहाँ आये तो उन्होंने उनसे कहा, 'श्रीमान्, आज होटल में, जिसे आम लोग अखाद्य कहते हैं, खाकर आया हूँ।' ठाकुर ने उत्तर दिया- तुझे कोई दोष-पाप नहीं लगेगा' (वही पृ. ८७)

अब श्री श्री माँ की जुबानी, नरेन के खाना पकाने का किस्सा सुनें। ठाकुर के लिए रसोई बनाने का जिक्र छिड़ा था। 'जब मैं काशीपुर में ठाकुर के लिए खाना पकाती थी तब ठण्डे पानी में ही मांस चढ़ा देती थी। थोड़ा सा तेजपत्ता और मसाले डाल देती थी। मांस जब रुई की तरह सीझ जाता था, तो उतार लेती थी। मेरे नरेन को तरह-तरह से मांस पकाना आता था। वह मांस को खूब भूनता था, आलू मसलकर कैसे-कैसे तो पकाता था, क्या तो कहते हैं उसे? शायद किसी तरह का चॉप-कटलट होगा।' (वही पृ. ८८)

सद्‌आचरण को ही परम धर्म कहा है।

आचारः परमो धर्मः ।।

शेष भाग अगले अंक में.....

thearyasamaj.org

चित्तमेकाग्रं कथन्न भवति

- स्वामी विष्वङ्

सम्पूर्ण विश्व में मनुष्यों की संख्या लगभग सात अरब है, इतने मनुष्यों में आस्तिक और नास्तिक के रूप में विभाग किया जाये, तो आस्तिकों की संख्या ही अधिक होगी। और नास्तिकों के मन में भी किसी न किसी रूप में ईश्वर की सत्ता परोक्ष रूप में रहती ही है। हाँ, वे नास्तिक वाणी से कभी ईश्वर को स्वीकार नहीं करते हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक समाचार पत्र में संसार के शीर्ष दस नास्तिकों का विवरण दिया था। उसमें यह स्पष्ट लिखा था कि उन दस शीर्ष नास्तिकों ने भी किसी न किसी रूप में ईश्वर की सत्ता स्वीकारी है। हाँ, यह अवश्य है कि वे नास्तिक ईश्वर जैसे किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं करते, परन्तु उनके मन में किसी कोने में अदृश्य शक्ति का डर (भय) अवश्य था....। उपरोक्त कथन का अभिप्राय यह है कि मनुष्य किसी न किसी रूप में आस्तिक है। कहने का आशय यह है कि संसार में ईश्वर को मानने वालों की संख्या अधिक नहीं, बल्कि लगभग-लगभग पूरी है। यद्यपि ईश्वर को मानने वाले अरबों हों परन्तु सभी ईश्वर को जानने व समझने के लिए या प्राप्त (साक्षात्कार) करने के लिए पुरुषार्थ करते हों, ऐसा नहीं है। संसार में जितने लोग विद्या पढ़ने के लिए पुरुषार्थ करते हैं उतने लोग ईश्वर को पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करते हैं और जितने लोग पैसा, नौकरी, जमीन आदि को पाने के लिए पुरुषार्थ करते हैं उतने ईश्वर के लिए नहीं करते हैं। इस बात को इस रूप में भी कह सकते हैं कि जितने लोग धन-दौलत के लिए **कर्म** करते हैं उतने लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं करते हैं। इसी प्रकार जितने लोग **ज्ञान** प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं उतने लोग **उपासना** के लिए नहीं करते हैं।

मनुष्य की सफलता में ज्ञान, कर्म व उपासना तीनों ही मुख्य हैं। इनमें से किसी एक को गौण नहीं कर सकते परन्तु मनुष्य ज्ञान को मुख्य बना कर कर्म व उपासना को गौण बना देता है या कर्म को मुख्य बना कर ज्ञान व उपासना को गौण बना देता है अथवा उपासना को मुख्य बना कर ज्ञान व कर्म को गौण बना देता है। संसार में कर्म करने वाले सब से अधिक दिखाई देते हैं, उनसे कम ज्ञान प्राप्त करने वाले दिखाई देते हैं और उनसे भी कम उपासना करने वाले होते हैं। जितने भी लोग उपासना करने वाले होते हैं, वे सब पूरे संसार के मनुष्यों की संख्या की दृष्टि में बहुत कम मात्रा में होते हैं। यहाँ पर उपासना का अभिप्राय यह नहीं कि ईश्वर को केवल स्मरण करना या ईश्वर को प्रणाम करना या ईश्वर को स्वीकार करना अथवा ईश्वर को केवल मान कर आस्तिक कहलवाना। बल्कि उपासना करने का अभिप्राय है सभी कार्यों को कुछ समय (१५, ३० मिनट, १ व २ घण्टे) के लिए रोक कर अर्थात् न ज्ञान प्राप्त करना और न ही किसी अन्य कार्य करना केवल उपासना (आसन लगा कर आँखे मूँद कर अपनी इन्द्रियों व मन को बाहर के विषयों से हटा कर मन को एक स्थान पर धारणा बना कर केवल ईश्वर का ध्यान) करना है। इसप्रकार की प्रक्रिया को जो महर्षि पतञ्जलि व महर्षि वेदव्यास ने बतायी है, ऐसी प्रक्रिया को लेकर पूरे संसार में बहुत कम लोग करते हैं। पूरे संसार में जितने मनुष्य हैं उनकी संख्या की दृष्टि से उपासना करने वालों की संख्या उपरोक्त कारण से इसीलिए कम है।

उपासना करने वालों की संख्या भले ही कम हो परन्तु जितने भी लोग उपासना करते हैं, उनमें अधिकांश लोग मन को एकाग्र कर नहीं पाते हैं। जो लोग चाहते हुए भी उपासना में मन को एकाग्र नहीं कर पाते हैं उन के पीछे बहुत से कारण हैं। यहाँ पर कुछ कारणों को लेकर विचार करते हैं। यद्यपि पहले इस सम्बन्ध में संक्षेप में संकेत भी किया है परन्तु यहाँ पर विस्तार से विचार करते हैं- परमपिता परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिए जीवन सुचारू रूप से चलाने के लिए २४ घण्टे दिये हैं। उनमें से मनुष्य के निद्रा के लिए ६ घण्टे हैं, जो सब को निकालना होता है बचे हुए १८ घण्टों में से कोई उपासक यदि २ घण्टे का समय उपासना के लिए निकालता है, तो १६ घण्टे बचते हैं। यहाँ पर यह विचार करके समझना चाहिए कि उपासक १६ घण्टों में क्या-क्या कर्म करता है और कैसे करता है? अथवा क्या-क्या ज्ञान प्राप्त करता है और कैसा ज्ञान प्राप्त करता है? क्योंकि मनुष्य बिना कर्म किये, बिना ज्ञान प्राप्त किये खाली नहीं रह सकता। इसलिए यह विचार करना अत्यन्त आवश्यक है कि १६ घण्टों का प्रभाव मन पर क्या पड़ता है और उपासना के २ घण्टों का क्या प्रभाव पड़ता है। उपासना विषय को छोड़कर दो ही (कर्म, ज्ञान)

thearyasamaj.org

विषय बचते हैं इसलिए उपासक या तो कर्म करेगा या ज्ञान प्राप्त करेगा। यदि उपासक कर्म करता है तो क्या-क्या करता है- प्रात:काल उठने से लेकर (दोनों समय उपासना को छोड़कर) रात्रि में निद्रा लेने तक अनगिनत कर्म- खाना, पीना, लेना, देना आदि करता रहता है।

इन कर्मों को करता हुआ उपासक यदि अन्यों के साथ ऐसा व्यवहार करता हो जिससे अहिंसा के स्थान पर हिंसा हो क्योंकि उपासक असावधानी से या अज्ञानता से अपने व्यवहार से अन्यों को दु:ख देता रहता है और वह दु:ख अन्यायपूर्वक होता है। उदाहरण के लिए वह किसी अन्य व्यक्ति से बात कर रहा हो और वहाँ आसपास में और लोग भी हैं परन्तु उस उपासक को यह ध्यान नहीं रहता कि मेरे आस-पास और लोग भी हैं, ऊँचे स्वर से बात कर रहा है जिससे अन्यों को व्यवधान हो रहा है। उपासक को यह समझ में नहीं आता कि इससे हिंसा हो रही है। इसीप्रकार अनेक विषयों में बिना विचार किये, बिना प्रमाणित किये , जो मूंह में आया बोल देता है। इससे असत्य भाषण हो जाता है, इसके साथ-साथ अनेक बार किसी न किसी स्वार्थ को लेकर असत्य बोलता रहता है। उपासक को यह पता नहीं चल पाता है कि इसके कारण से मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, मन कितना मलिन होगा, इसका अनुमान नहीं कर पाता है। व्यवहार काल में उपासक ऐसा व्यवहार करता है, जिसके कारण अव्यवस्था होती है और चोरी बन जाती है। उदाहरण के लिए वर्तमान सरकार की व्यवस्था के नियमों का उल्लंघन करके बिल न लेना, टैक्स न भरना आदि-आदि। उपासक ब्रह्मचर्य (रज-वीर्य) का पालन न करता हुआ असंयमित होकर जीवन चलाता है। उपासक ऐसे-ऐसे अनावश्यक विचारों को मन में रखता है और अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह करता रहता है, जिनके कारण मन व्याकुल होता रहता है।

उपासक व्यवहार काल में ऐसे-ऐसे कर्मों को करता है, जिनका परिणामस्वरूप हिंसा, असत्य, स्तेय (चोरी), व्यभिचार और परिग्रह होता रहता है। इस योग के प्रथम अङ्ग (यम) का उल्लंघन करने का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसकी सम्भावना उपासक नहीं कर पाता है। प्राय: उपासक बाह्य शुद्धि का बहुत ध्यान रखता है जैसे स्नान कर धुले हुए वस्त्र पहन कर सन्ध्या करना, अग्निहोत्र करना आदि बाहर से साफ-सुथरा रहने का विशेष प्रयास करता है परन्तु मन को साफ-सुथरा करने के लिए विशेष पुरुषार्थ नहीं करता। इस प्रकार जैसी शुद्धि होनी चाहिए वैसी नहीं हो पाती है। उपासक भौतिक साधनों (धन-सम्पत्ति आदि) को लेकर उतनी आशा नहीं रखता परन्तु आध्यात्मिक साधनों (विवेक, वैराग्य आदि) को लेकर बहुत अधिक आशा रखता है। जब आध्यात्मिक साधन उतनी मात्रा में नहीं मिलते हैं, तो निराश होता है और असन्तोष व्यक्त करता रहता है। उपासक तपस्या तो करता है परन्तु जैसी तपस्या करने से मन एकाग्र होता हो वैसी तपस्या नहीं करता। उदाहरण के लिए कोई-कोई शरीर को तो बहुत तपा (गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास आदि से) रहा होता है परन्तु जिस मन को तपाने (काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि को हटाने) से मन प्रसन्न होकर एकाग्र होता हो उस मन को न तपा कर केवल शरीर या केवल मौन रहकर वाणी को तपाकर एकाग्र नहीं हो सकता।

उपासक स्वाध्याय के रूप में योगशास्त्र का या उपनिषदों का या किसी अन्य एक-दो-तीन अथवा कुछ और ग्रन्थों का ही स्वाध्याय करता है। स्वाध्याय के रूप में शास्त्र निर्धारित नहीं हैं कि केवल इतने ही शास्त्रों का स्वाध्याय करना, बाकी अन्य शास्त्रों का नहीं करना। उदाहरण के लिए कोई उपासक कहता है कि व्याकरण का स्वाध्याय (पढ़ना) नहीं करूँगा, कोई कहता है मीमांसा नहीं पढ़ूँगा, कोई कहता है गृह्य-सूत्र नहीं पढ़ूँगा, कोई कहता है छन्दशास्त्र नहीं पढ़ूँगा इत्यादि अनेक उपासक अनेक शास्त्रों को न पढ़ने की बात करते रहते हैं। मेरा यह कथन भी नहीं है कि संसार में जितने भी शास्त्र हैं उन सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिए परन्तु जिस योग को जीवन में उतारना चाहते हैं उस योग के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि एवं व्याख्याता महर्षि वेदव्यास के अनुसार **'स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनम्'** (योगदर्शन २.३२) अर्थात् स्वाध्याय उसे कहते हैं जो-जो मोक्ष को दिलाने वाले शास्त्र हैं उन-उनको पढ़ना स्वाध्याय कहलाता है। सभी ऋषियों का एक स्वर से कथन है कि वेद, वेद के अंग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प) और वेद के उपांग (षड् दर्शन) ब्राह्मण, उपवेद आदि शास्त्र मोक्ष को दिलाने वाले हैं। इन शास्त्रों को भी पढ़ते रहना चाहिए। मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि इन सब शास्त्रों को पढे बिना मोक्ष नहीं मिलेगा परन्तु यह कहना चाहता हूँ कि जब तक मोक्ष की योग्यता प्राप्त नहीं होती है तब तक उपासक को कोई न कोई ऋषिकृत ग्रन्थ (जिसे अब तक नहीं पढ़ा) पढ़ना चाहिए। उपासक को यह नहीं कहना और करना

thearyasamaj.org

चाहिए कि मैं केवल योग शास्त्र को पढ़ कर या कुछ ही शास्त्रों को पढ़ कर मोक्ष प्राप्त कर लूँगा अथवा उन शास्त्रों को (जिन शास्त्रों को अब तक नहीं पढ़ा) पढ़े बिना ही मोक्ष मिल जायेगा। मोक्ष की योग्यता अलग है हाँ, उस योग्यता को पाने के लिये शास्त्र साधन हैं।

उपासक को अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार नये-नये शास्त्र (मोक्ष को दिलाने वाले ऋषिकृत ग्रन्थ) पढ़ते रहना चाहिए। उपासक को जब तक मोक्ष की योग्यता प्राप्त नहीं होती अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार करके अविद्या रूपी क्लेशों का सर्वनाश नहीं होता तब तक नये-नये शास्त्र पढ़ते रहना चाहिए। ऋषिकृत ग्रन्थ किसी न किसी रूप में उपासक के मन में रहने वाली अविद्या को अवश्य नाश करेगा। इसप्रकार उपासक को नवीन-नवीन जानकारी जो मोक्ष में सहयोगी है उसे अपनाना चाहिए। इसके पीछे एक मात्र कारण है अविद्या, क्योंकि अविद्या किस रूप में उपासक के जीवन में व्याप्त होकर रहती है इसका सूक्ष्म परीक्षण स्वाध्याय करने पर ही पता चलता है। इसलिए उपनिषद्कार कहते हैं- **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'** (तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षावल्ली ११.१) अर्थात् स्वाध्याय को कभी त्याग नहीं करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह भी होता है जो-जो शास्त्र पढ़े हैं उन-उनकी आवृत्ति करते रहना चाहिए अर्थात् उन शास्त्रों की शिक्षाओं को स्मरण करना चाहिए। स्वाध्याय का यह भी अभिप्राय है कि जिन-जिन शास्त्रों को नहीं पढ़े उन्हें भी पढ़ते जाये और अपने मन में व्याप्त अविद्या को दूर करते जाये। यदि सूक्ष्मता से विचार करके देखा जाये, तो उपासक उन शास्त्रों को पढ़ने से घबराता है जिन शास्त्रों को उसने अब तक नहीं पढ़ा। यहाँ पर शास्त्रों को पढ़ने का केवल यह अभिप्राय नहीं है कि मैंने सब शास्त्रों को पढ़ लिया और मैं **'सर्वशास्त्रवित्'** बन गया हूँ, इस अभिमान के लिए शास्त्र नहीं पढ़ने हैं। बल्कि शास्त्र इसलिए पढ़ने हैं कि मन में व्याप्त अविद्या दूर हो जाये जिससे मोक्ष के अधिकारी बन कर शीघ्रता से ईश्वर साक्षात्कार कर सके। क्योंकि क्या पता किस शास्त्र की कौनसी बात घर कर जाये और जीवन का परिवर्तन हो जाये अर्थात् विवेक वैराग्य प्राप्त हो जाये। जब तक उपरोक्त स्थिति नहीं बनती तब तक उपासक को नवीन-नवीन मोक्ष शास्त्र को पढ़ते रहना चाहिए।

उपासक को व्यवहार काल में ईश्वर प्रणिधान करते रहना होता है अर्थात् प्रत्येक कर्म को ईश्वर को समर्पित करना होता है, परन्तु उपासक ऐसा नहीं कर पाता है। बहुत सारे लौकिक-सम्बन्धों को निभाने के लिए उपासक ईश्वर को भुला देता है। अविद्या रूपी अज्ञानता के कारण अलग-अलग स्वार्थों में फंसकर कर्मों को ईश्वर के प्रति समर्पित करना ही भूल जाता है। अनेक बार उपासक छोटे-छोटे लक्ष्यों को समक्ष रख कर ईश्वरीय लक्ष्य को गौण कर देता है। इस प्रकार अनेकों कारणों से ईश्वर प्रणिधान यथावत् नहीं कर पाता है। जो उपासक एक दिन के १६ घण्टों को अपने लक्ष्य से विपरीत प्रयोग करता हुआ व्यवहार काल में अनगिनत कर्म, अनगिनत संस्कार बनाता है। उसके मन में उन्हीं कर्मों व संस्कारों का प्रभाव दिनभर रहता है। जैसे कर्म और जैसे संस्कार उत्पन्न किया, उसी के अनुरूप उपासक के मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार आदि उत्पन्न होते रहेंगे। इन्हीं काम, क्रोध आदि से युक्त होकर फिर उसी प्रकार के कर्म करने लगता है और फिर जैसे-जैसे कर्म करता जाता है, तो वैसे-वैसे संस्कार भी बनते जाते हैं। इस प्रकार के कर्मों, संस्कारों और अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश से मन सदा भरा रहता है।

उपासक का उपसना काल जब आता है तब उपासना के लिए मन को ईश्वर में एकाग्र करना चाहता है, परन्तु मन ईश्वर में एकाग्र नहीं हो पाता है। इसके पीछे यही कारण रहता है कि उपासक के व्यवहार काल के १६ घण्टों का प्रभाव। उपासक ने दिनभर जैसे-जैसे कर्म किये, जिस अविद्या से युक्त होकर किये और जैसे-जैसे संस्कार बने वे सब मन में भरे हुए होने के कारण वे ही विचार बार-बार मन में सामने आते रहते हैं। यदि उपासक ने राग से युक्त होकर कर्म किया, तो उपासना के काल में वह राग जिसके प्रति किया वह व्यवधान उत्पन्न करता है। यदि उपासक ने द्वेष से युक्त होकर कर्म किया, तो उपासना के काल में वह द्वेष जिसके प्रति किया वह व्यवधान उत्पन्न करता है। व्यवहार काल में लक्ष्य (ईश्वर) को गौण करके भौतिक पदार्थों या चेतन (माता, पिता, पति, पत्नी आदि) पदार्थों को मुख्य करके कर्म किया, तो उपासना काल में उन्हीं भौतिक पदार्थों का या चेतन पदार्थों का बार-बार स्मरण आता रहता है। उपासना काल में उन पदार्थों (जड़ व चेतन) के प्रति रुचि, आकर्षण, लगाव उत्पन्न होता रहता है। उनकी उन्नति के विचार बनाते रहते हैं। उनको और उन्नत (बढ़ाने) करने के लिए सोचने लगते हैं। यद्यपि उपासक इन सब विचारों को रोकने का पुरुषार्थ करता रहता है, परन्तु रोक नहीं पाता है। न रोकने के पीछे उपरोक्त सभी कारण बनते हैं। प्रायः उपासक उपासना के पूरे

thearyasamaj.org

समय को रोकने में लगा देता है। संघर्ष करता-करता उपासना के काल को पूरा करता है। प्रतिदिन उपासना के लिए बैठता है, परन्तु प्रतिदिन विचारों को रोकने में ही समय निकल जाता है पर उपासना, उपासना के रूप में नहीं हो पाती है।

जिस प्रकार उपासक उपासना काल में मन को ईश्वर में एकाग्र करने के लिए संघर्ष करता रहता है। इस संघर्ष को व्यवहार काल में करना चाहिए जिससे मन खिन्न न बने और प्रसन्नता से समस्त कार्यों को ईश्वर-आज्ञा पूर्वक करते रहे और उपासना का समय निकट आ जाये, तो मन को सब ओर से हटा कर ईश्वर में एकाग्र कर सके। उपासक प्राय: इस बात को नहीं समझ पा रहा होता है कि उपासना के काल में जो पुरुषार्थ किया जा रहा है, उसे व्यवहार काल में किया जाना चाहिए। उपासक उपासना को बहुत अच्छी बनाना चाहता है, परन्तु व्यवहार में हिंसक (क्रोध, ईर्ष्या, असूया आदि के माध्यम से) बना रहना चाहता है और क्रोध आदि को आवश्यक मानता है। आवश्यकता पड़ने पर असत्य का सहारा लेना पसन्द करता है। इसीप्रकार यम के अन्य विभागों और नियम आदि योग के अंगों में भी ऐसा ही करना चाहता है। यदि व्यवहार काल में जिन-जिन को आवश्यक मानकर उन-उन को करता हुआ आ रहा हो, तो मन में से उनको अलग कैसे कर सकता है? जब तक जिन को आवश्यक मानकर करता होता है तब तक मन में उनका उभर कर आना तो स्वाभाविक है। इसीकारण उपासना के समय उपासक उनको रोक नहीं पाता है।

उपासना के काल में मन को एकाग्र करना चाहते हैं, तो उपासना काल से भिन्न व्यवहार काल में प्रत्येक कर्म को करते हुए यह विशेष ध्यान रखना है कि उस कर्म का मुख्य उद्देश्य ईश्वर को प्राप्त करना हो। ईश्वर प्राप्ति के विरोधी कारणों को व्यवहार काल में आने नहीं देना है। यदि किसी कारण विरोधी कारण व्यवहार काल में उपस्थित हो भी जाये, तो उन्हें रोकना है और यदि नहीं रुकते हैं, तो उन्हें रोकने का अभ्यास उसीप्रकार करना है जिस प्रकार से उपासना के काल में प्रत्येक उपासक प्रयत्न करता है। इसलिए जितना भी प्रयत्न उपासना के समय किया जाता है उतना प्रयत्न व्यवहार काल में करने का अभ्यास करना है। यदि प्रत्येक उपासक इस सम्बन्ध में उद्यम करना प्रारम्भ कर दें, तो आज जो उपासक उपासना के काल में जिस प्रकार से प्रयत्न करता है उस प्रकार से प्रयत्न न करके सरलता से मन को एकाग्र कर सकता है। इन उपरोक्त कारणों पर विचार करने से पता चलता है कि मन किस कारण से एकाग्र नहीं हो पा रहा है, इसका बोध हो जाता है। कारण का बोध होने से कारण को हटाना सरल हो जाता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-09110400057530 **बैंक का नाम**-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। **IFSC - IBKL0000091**

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 **बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959**

thearyasamaj.org

आर्यों का महाकुम्भ
ऋषि मेला - अजमेर

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा प्रतिवर्ष ऋषि उद्यान, अजमेर में एक राष्ट्रीय स्तर का आयोजन किया जाता है जो अब **ऋषि-मेले** के नाम से सुविख्यात है। तीन दिवसीय यह बृहद् कार्यक्रम दीपावली के पाँच-सात दिन पश्चात् होता है। कार्यक्रमों की विविधता की सांस्कृतिक छटा बिखरने वाले इस कार्यक्रम की जिन आर्यजनों को उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है, देशभर में उनकी काफी बड़ी संख्या है और वे यात्रा की असुविधाएँ झेलकर भी वेद-गंगा में स्नान करने के लिए यहाँ पहुँचते हैं। मेले की उत्कृष्टता एवं लोकप्रियता का यह प्रमाण है। अब से चालीस-पचास वर्ष पूर्व यह स्वरूप और स्तर गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी, हरिद्वार के वार्षिक उत्सव का होता था।

'ऋषि मेले' को जो राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त हुई है उसकी पृष्ठभूमि में परोपकारिणी सभा के पदाधिकारियों की सुविचारित योजना और सतत् प्रयास ही प्रमुख कारण है। उपयुक्त वातावरण के निर्माण के लिए सभा द्वारा वर्ष भर थोड़े-थोड़े अन्तराल पर भिन्न-भिन्न प्रकार के शिविरों का आयोजन ऋषि उद्यान में किया जाता है। यथा- योग साधना शिविर प्राथमिक स्तर, द्वितीय स्तर आदि, आर्यवीर दल शिविर, आर्य वीरांगना दल शिविर, संस्कृत सम्भाषण शिविर आदि। वर्ष २०१३ में ऋषि मेला ८, ९ एवं १० नवम्बर को था। उसके दो सप्ताह पश्चात् ही २४ नवम्बर से १ दिसम्बर की अवधि में 'ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर' का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। साधना तथा ध्यान बड़े सूक्ष्म विषय हैं, फिर भी साधना शिविरों में साधक-साधिकाओं की उपस्थिति प्रायः शताधिक ही रहती है। इस विधा में अपनी स्वाभाविक रुचि एवं अपने सतत् अभ्यास द्वारा अर्जित कुशलता से श्रद्धेय स्वामी विष्वङ् जी महाराज इन शिविरों का व्यावहारिक रूप से बहुत कुशलता से संचालन करते हैं। आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य सोमदेव जी उपाध्याय, आचार्य कर्मवीर दर्शनाचार्य जी भी सत्रों का संचालन करते हैं। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् एवं वेद तथा व्याकरण आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण जिन्हें यथावश्यकता हर समय उपस्थित हैं ऐसे वैदिक गवेषक एवं मनीषी माननीय डॉ. धर्मवीर जी योगदर्शन की अति उत्तम व्याख्या द्वारा शिविरार्थियों का ज्ञानवर्धन करते हैं तथा शंकाओं का समाधान करते हैं। योग-साधना शिविरों का संचालन ऋषि उद्यान में विद्वानों द्वारा इतनी उत्तम रीति से किया जाता है कि बहुत से शिविरार्थी शिविर की अवधि बढ़ाकर दो सप्ताह की कराना चाहते हैं। भारत के विभिन्न प्रान्तों से सहभागी आते हैं और उनके माध्यम से वेद के विचार दूर-दूर तक पहुँचते हैं और उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। अबोहर में एक महानुभाव ने ऋषि उद्यान से माननीय श्री सोमदेव जी उपाध्याय एवं ब्र. कर्मवीर दर्शनाचार्य जी को अपने यहाँ आदरपूर्वक आमन्त्रित करके आठ दिवसीय योग साधना शिविर का आयोजन कराया। यह सब ऋषि उद्यान के वातावरण का प्रभाव है। ऋषि मेले से दस-बारह दिन पूर्व ही १२ से १९ अक्टूबर २०१४ की अवधि में ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक एवं द्वितीय स्तर) का आयोजन किया गया जिसमें १५५ शिविरार्थी भाग लिये। वर्ष भर यह क्रम निर्बाध गति से चलता रहता है। ऋषि के मिशन एवं वेद की जय-जय कार होती है।

शिविरों का आयोजन करने में ऋषि उद्यान में संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल का विशेष योगदान रहता है। पूरी व्यवस्था गुरुकुल के छात्र (ब्रह्मचारी) एवं आचार्यगण सम्भालते हैं एवं सभा के सुयोग्य अधिकारियों का वरद् हस्त उन पर सदैव बना रहता है। ऋषि उद्यान में ही एक उत्तम गोशाला चल रही है जिसमें इस समय छोटे-बड़े लगभग ५० पशु हैं। ब्रह्मचारियों, आश्रमवासी, संन्यासी-वानप्रस्थियों, विद्वानों को दोनों समय दूध निःशुल्क वितरित किया जाता है। प्रातःराश और दोनों समय का भोजन सभी के लिए उपलब्ध रहता है। यदि शिविर न भी चल रहे हों, तो भी प्रायः अस्सी-सौ लोगों का भोजन तो बनता ही है। भोजन सात्त्विक एवं पौष्टिक होता है। दोनों समय दाल, सब्जी, चावल, रोटी भोजन में होते हैं। गोशाला के कारण ही यह सम्भव हो पाता है कि शिविर की अवधि में शिविरार्थियों को दोनों समय दूध उपलब्ध कराया जाता है।

thearyasamaj.org

सभा गौवों का भी विशेष ध्यान रखती है। सभी गौवें, उनके बछड़े-बछिया एवं साण्ड इतने स्वस्थ हैं कि राजस्थान में आयोजित पशु-मेले में पुरस्कृत होते रहे हैं। गुरुकुल, गोशाला, अतिथियज्ञ के नाम पर जो धन दान-दाताओं से परोपकारिणी सभा को प्राप्त होता है, पूरी ईमानदारी से सभा उसे उन उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाती है। दानी महानुभाव निश्चिन्त होकर परोपकारिणी सभा को सहयोग करते रहें जिससे ये सारे काम सुचारु रूप से चलते रहें।

ऋषि मेला की तैयारी प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से वर्ष भर चलती रहती है। परोपकारिणी सभा का दयानन्द आश्रम केसरगंज, अजमेर स्थित वैदिक यन्त्रालय वैदिक साहित्य का प्रकाशन एवं विक्रय का कार्य निरन्तर करता रहता है। महर्षि के ग्रन्थों का तीन खण्डों में प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य है। अथर्ववेद का श्री पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार, वेदोपाध्याय गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार कृत भाष्य प्रकाशित हो गया है। ऋग्वेद के आठवें मण्डल का जो भाष्य बहुत समय से उपलब्ध नहीं था, वह प्रकाशनाधीन है और शीघ्र ही पाठकों को उपलब्ध हो जायेगा। मुरादाबाद निवासी मुंशी इन्द्रमणि के शिष्य लाला जगन्नाथ दास ने ऋषि-द्रोही होने से पहले पाखण्ड-खण्डन की एक काव्यमय पुस्तक 'पोपलीला' लिखी थी। पुस्तक मुरादाबाद तक में अप्राप्य हो गयी थी, ऐसा लगता है कि लाला जी ने आर्यसमाज से निष्कासित होते ही इसी सब प्रतियाँ जला दीं या नष्ट करवा दीं। वह समझ गए कि उनकी यह कृति अब उनकी पोल खोलने में आर्यों के काम आएगी। उत्तर प्रदेश से प्रकाशित यह पुस्तक आर्यजगत् के महाखोजी इतिहासकार और महर्षि के मिशन की सफलता के लिए आकाश-पाताल एक करने वाले प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी को भी न मिली परन्तु शाहपुरा (राजस्थान) से परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी को यह पुस्तक मिल गई। सभा ने इसे भी 'सत्यासत्य निर्णय' नाम से प्रकाशित कर दिया है। इसकी भूमिका स्वयं प्रा. राजेन्द्र जी ने लिखी है। अच्छा हो यदि आर्यसमाजें इसे मंगाएँ एवं वितरित करें।

वैदिक साहित्य के प्रकाशन के साथ-साथ सभा साहित्य के वितरण का भी काम करती है। बड़ी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश के निःशुल्क वितरण का काम चल रहा है। इस वर्ष हिन्दी के अतिरिक्त, अंग्रेजी, उर्दू सहित पाँच भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद एवं मुद्रण का काम चल रहा है जिससे स्वाध्यायशील लोगों के लाभार्थ उनका वितरण किया जा सके। महर्षि के हस्तलिखित ग्रन्थों (पाण्डु-लिपियों) की रक्षा एवं रख-रखाव का काम सभा द्वारा तत्परता के साथ किया जा रहा है। वैदिक वाङ्मय के एक विशाल पुस्तकालय का अनुरक्षण एवं संचालन परोपकारिणी सभा द्वारा किया जा रहा है जिसका लाभ शोधार्थी एवं विद्वज्जन उठाते हैं। सभा का पाक्षिक मुखपत्र '**परोपकारी**' आज आर्यजगत् में सर्वश्रेष्ठ पत्र है जिसके सम्पादकीय लेख सामयिक एवं राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों पर होते हैं। इस दृष्टि से धर्मवीर पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. पद्मसिंह शर्मा, पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति का स्मरण कराने वाले माननीय डॉ. धर्मवीर जी जैसे यशस्वी एवं निर्भीक पत्रकार पिछले लगभग ढाई-तीन दशकों से इस पत्र का सम्पादन कर रहे हैं। आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण, तड़प-झड़प जैसे स्थायी लेखों के अतिरिक्त सैद्धान्तिक लेख, शंका समाधान, कविताएँ और महर्षि दयानन्द वचनामृत का रसास्वादन पाठक इसमें करते हैं। आर्यजगत् की सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रधानता के साथ इसमें प्रकाशित होती हैं। पाँच अंकों की संख्या में प्रकाशित होने वाले इस पत्र का कभी एक भी अंक एक दिन के विलम्ब से भी पोस्ट नहीं होता है। नियमित प्रेषण का यह भी एक कीर्तिमान है।

वेद प्रचार हेतु सम्पर्क एवं संवाद का काम सभा के पदाधिकारी करते रहते हैं। इस वर्ष भीषण गर्मी के दिनों में माननीय डॉ. धर्मवीर जी, कार्यकारी प्रधान परोपकारिणी सभा अपने साथ आचार्य सोमदेव जी एवं आचार्य कर्मवीर जी को लेकर राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल आदि राज्यों के आर्यजनों से सम्पर्क के लिए निकले। अबोहर पहुँचकर वहाँ से प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी को साथ लिया। लाला लाजपतराय के पैतृक निवास को देखा, गुरुकुल करतारपुर (पंजाब) गये। श्री पं. चमूपति जी का हस्तलिखित और लाला लाजपतराय को समर्पित पुस्तक 'खाके शहीदाँ' जैसी दुर्लभ कृति भी इसी यात्रा में मिली। राजस्थान प्रान्त के दो-तीन दौरे आचार्य सोमदेव जी, आचार्य कर्मवीर जी एवं आचार्य सत्यप्रिय जी ने किये। उद्देश्य था बड़ी संख्या में लोगों को सभा से, आर्यसमाज से जोड़ना। इस प्रकार के प्रयत्नों का दीर्घकालीक प्रभाव होता है और सभा को लाभ मिलता है।

माननीय डॉ. धर्मवीर जी स्वयं वेदप्रचारार्थ भारतभर की आर्यसमाजों में वर्षभर जाते रहते हैं। संस्था को विकास के मार्ग पर ले चलने की उनमें अद्भुत क्षमता और जीवट है। मई-जून-२०१४ में मैं सपत्नीक ऋषि उद्यान गया हुआ था। उसी अवधि में कुछ दिनों के लिए प्रा. जिज्ञासु जी भी

thearyasamaj.org

आ गये। उनका और मेरा कमरा आमने-सामने ही था। एक दिन पाँच-साढ़े पाँच बजे मुझे बुलाकर कहने लगे, 'सत्येन्द्रसिंह जी, ये डॉ. धर्मवीर जी भी बड़े विचित्र व्यक्ति हैं। प्रात: ४ बजे जब से उठते हैं और रात्रि को जब सोते हैं, तब तक इन्हें आर्यसमाज के काम की ही चिन्ता लगी रहती है, और किसी काम या बात की इन्हें याद ही नहीं आती।' मैंने कहा 'जिज्ञासु जी, इन्हें और कोई काम आता ही नहीं।' मेरी बात सुनकर जिज्ञासु जी हँस पड़े और कहने लगे कि 'आपने बिल्कुल ठीक कहा।' परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान और वहाँ पर संचालित सभी कार्यक्रमों की नींव में माननीय डॉ. धर्मवीर जी की ऊहा, उनका वैदुष्य, महर्षि के मिशन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, संस्था को प्रगति के पथ पर ले चलने की सूक्ष्म समझ ही मुख्य कारक हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा-शक्ति के कारण ही अधिकाधिक विद्वानों एवं सहयोगियों का सहयोग उन्हें मिलता है। परोपकारिणी सभा एवं ऋषि उद्यान में आज जो कुछ हम देखते हैं, यह उन्हीं के तप, त्याग और सतत् प्रयत्नों का सुफल है।

परोपकारिणी सभा के पदाधिकारियों एवं ऋषि उद्यान में स्थित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के आचार्यगणों की सकारात्मक सोच एवं सहयोगी स्वभाव भी सभा के कार्यक्रमों की शोभा एवं सफलता में अभिवृद्धि का कारण है। माननीय आचार्य श्री सनत्कुमार जी जयपुर की एक आर्यसमाज में अपना गुरुकुल चला रहे थे, उनके पास पन्द्रह-सोलह विद्यार्थी थे। वहाँ उन्हें कुछ कठिनाई हो गयी। उन्होंने श्री डॉ. धर्मवीर जी से सम्पर्क किया और अपनी समस्या बताई। श्री डॉ. धर्मवीर जी ने अविलम्ब कहा कि 'अपना गुरुकुल (छात्रों और समान सहित) लेकर ऋषि उद्यान आ जाओ, यहाँ पर्याप्त स्थान है।' ऋषि उद्यान में भी एक गुरुकुल पहले से चल रहा है और उसके आचार्यगण माननीय श्री स्वामी विष्वङ् जी एवं श्री सत्यजित् जी हैं, अत: उनसे भी बात कर लीजिए जिससे समन्वय एवं सामंजस्य बैठाया जा सके। श्री सनत्कुमार जी का फोन आते ही दोनों आचार्यगणों ने तुरन्त सहमति प्रदान कर दी और उनका गुरुकुल भी ऋषि उद्यान में आ गया। यह अगस्त-सितम्बर २०१४ की बात है। मैं उन दिनों ऋषि उद्यान में ही था।

ऋषि मेले के दिनों में ऋषि उद्यान आने वाले आर्यजनों को आर्यसमाज की जीवन्तता और परोपकारिणी सभा की कर्त्तव्यपरायणता का दृश्य देखने को मिलता है। आगन्तुकों को यहाँ आकर कोई असुविधा न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए गुरुकुल के ब्रह्मचारी, राजस्थान आर्यवीर दल के आर्यवीर तथा सभा के सदस्य और पदाधिकारी हर समय उद्यत रहते हैं। बड़ी संख्या में जब श्रोता आए हों तो किसी न किसी की अस्वस्थता की सम्भावना रहती है। तदर्थ सभा ने सरस्वती भवन में एक आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय खोला हुआ है। सुयोग्य चिकित्सक माननीय डॉ. रमेश मुनि जी इस चिकित्सालय का संचालन करते हैं।

ऋषि मेले का आरम्भ होने से पूर्व ही ३० अक्टूबर को सुश्री सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा, प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु, प्रो. डॉ. राजेन्द्र विद्यालङ्कार, आर्य प्रतिनिध सभा महाराष्ट्र के प्रतिनिधि श्री ओ.पी. होलीकर, श्री नरदेव गुडे, श्री डॉ. वेदपाल जी, श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, श्री पं. इन्द्रजित् देव जी, डॉ. अशोक कुमार जी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल जी पथिक, कुँ. भूपेन्द्र सिंह जी आदि कार्यक्रम में भाग लेने के लिए यथासमय ऋषि उद्यान पहुँच गये थे। बड़ी संख्या में पधारे वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य कार्यक्रम के संचालन के लिए आनासागर के मनोरम तट पर स्थित ऋषि उद्यान के विशाल प्रांगण में (स्वामी ओमानन्द आश्रम के ठीक सामने) भव्य पण्डाल बनाया गया। ऋषि उद्यान के सभी भवन एवं सम्पूर्ण परिसर को बड़ी भव्यता के साथ सजाया गया और विद्युत् के प्रभाव से सारी शोभा द्विगुणित हो गयी। प्रांगण के सरस्वती भवन की ओर के भाग में पुस्तक विक्रेताओं के स्टॉल लगे थे। वैदिक पुस्तकालय, अमर स्वामी प्रकाशन संस्थान, आर्य प्रकाशन, गोविन्दराम हासानन्द विजयकुमार दिल्ली, गुरुकुल झज्जर वैदिक साहित्य प्रकाशन आदि पुस्तक विक्रेताओं के पण्डाल सुव्यवस्थित ढंग से लगे थे। श्रोताओं के रूप में भारतभर से पधारे आर्यजनों ने बड़ी मात्रा में पुस्तकें खरीदीं। आयुर्वेदिक औषधियों की भी कुछ स्टॉल थीं।

शुक्रवार ३१/१०/२०१४ को प्रात: ७ बजे ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ ऋषि मेले का आरम्भ हुआ। पूरी यज्ञशाला एवं यज्ञशाला के बाहर चारों ओर का स्थान श्रोताओं, सहभागियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों एवं देवियों से खचाखच भरा था। यजमानों के आसन पर श्री जयसिंह जी (जोधपुर), श्री मूलचन्द जी शाहपुरा, श्रीमती पुष्पा जी एवं श्रीमती पूर्णिमा जी (श्री राहुल जी अकोला के परिवारजन), श्री

thearyasamaj.org

श्रुतिशील जी (सभामन्त्री श्री ओममुनि जी के सुपुत्र) एवं श्री सोमेन्द्र जी विराजमान थे। यज्ञ आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्त्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बीच में आचार्य जी ने वेदों के महत्त्व एवं महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जैसे कृष्ण सुदर्शन चक्रधारी के नाम से तथा श्री राम धनुर्धर के रूप में प्रसिद्ध हुए, वैसे ही ऋषिवर 'वेदों वाला ऋषि' के नाम से विख्यात हुए। उन्होंने स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, पाखण्ड-खण्डन, विधवा विवाह, राष्ट्र की स्वाधीनता जैसे विषयों पर क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किये। आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की। स्थापना के बाद पचासों वर्षों तक उत्सवों के अवसरों पर प्रभात फेरियों में जो गीत गाये जाते थे उनमें प्रसिद्ध थे- 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने', 'वेदाँवालया ऋषिया तेरे आवन दी लोड'। ऋषि वेद को अपौरुषेय एवं सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। ऋषि ने शास्त्र-सम्मत विशुद्ध यज्ञ की विधि हमें बताई, साथ ही यह भी कहा कि आर्यावर्त देश में जब तक राजे-महाराजे बड़े-बड़े यज्ञ करते-कराते रहे तब तक यह देश रोगों से मुक्त और सुखों से परिपूर्ण रहा। यज्ञ को पुनः उसी प्रकार दैनन्दिन जीवन में अपनाकर राष्ट्र को सुखों से पूर्ण बनाया जा सकता है। वेद के स्वाध्याय (पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने) को ऋषि ने आर्यों का परम धर्म बताया। वेद हमें सत्य-असत्य का ज्ञान कराता है। ज्ञानी व्यक्ति दु:खों से दूर रहता है। ज्ञान से सुख मिलता है। क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष ज्ञान पर हावी हो जाते हैं। व्यवहार और धन का अभाव ही दरिद्रता है। यक्ष के साथ प्रश्नोत्तर में युधिष्ठिर ने दरिद्र को मृत बताया है- संवेदना और संवाद से शून्य होने की स्थिति। ऐसा व्यक्ति न स्वयं जीवित रहता है और न समाज को जीवित रख सकता है। इस स्थिति से बचने के लिए वेद और यज्ञ बड़ी निष्ठापूर्वक अपनाये जाने चाहिए।

यज्ञोपरान्त वेद-प्रवचन श्री सत्यजित् आचार्य जी का हुआ। उन्होंने महर्षिकृत आर्याभिविनय ग्रन्थ के द्वितीय पुष्प के एक मन्त्र **'ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने....'** की व्याख्या करते हुए कहा कि महर्षि को हृदय से समझने की आवश्यकता है। मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि प्रभु आप हमें सरलता से प्राप्त हो जाओ। हम कल्याण से युक्त हो जायें। मन्त्र की व्याख्या करते हुए महर्षि ईश्वर को विज्ञान-स्वरूप बताते हैं। प्रभु हमें श्रेष्ठ उपायों को प्राप्त कराने वाला है। उसने हमें श्रेष्ठ उपाय प्रदान कर दिये हैं- बुद्धि, इन्द्रियाँ, यह शरीर वही सब है। हम जीवन में इन साधनों का अपने कल्याण के लिए उत्तमता के साथ उपयोग करें।

प्रात:कालीन वेद-प्रवचन के पश्चात् ओ३म् ध्वजोत्तोलन का कार्य प्रात:काल लगभग १०.३० बजे हुआ। सरस्वती भवन के प्रांगण में श्रोताओं के रूप में पधारे आर्यजन एवं देवियाँ सरस्वती भवन की ओर मुख करके पंक्तिबद्ध रूप में खड़े हुए। उनके साथ ही आर्यवीर भी कतारबद्ध रूप में शान्त रूप में खड़े हुए। सरस्वती भवन की सिढ़ियों पर वानप्रस्थी-संन्यासीगण, सभाके ट्रस्टी और आमन्त्रित विद्वान् उपस्थित थे। आर्यवीरों की एक टोली शस्त्र-सन्नद्ध होकर सभा के कार्यकारी प्रधान माननीय श्री डॉ. धर्मवीर जी को आदरपूर्वक लेकर ध्वजस्थल पर आई। बहुत उल्लासमय वातावरण में ध्वजारोहण का कार्यक्रम श्रद्धेय प्रधान जी के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रधान जी ने सभी को आतंकवाद के खतरे से सावधान किया। उन्होंने कहा कि यदि भारत के स्वाधीन होने पर सरकार एवं देशवासियों द्वारा महर्षि दयानन्द जी की बात मानी गयी होती तो भारत भय मुक्त होता। परन्तु आज भारत ही नहीं, अमेरिका, इंग्लैण्ड सहित सारा विश्व भयभीत है। रूस, चीन, यूरोप कोई भी भयमुक्त नहीं है। इस भयावहता का कारण है- सत्ताओं द्वारा दुष्टों, आतंकियों, धूर्तों के साथ समझौतावादी नीति अपनाना। सत्य की उपेक्षा और असत्य एवं अन्यायपूर्ण बात को सहना ही बुराई के बढ़ने का एकमात्र कारण है। भिण्डरावाला, इण्डियन मुजाहिद्दीन, बिन लादेन आदि राक्षस सत्ताओं द्वारा ही पैदा किये गये थे। इस प्रवृत्ति को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने पर ही शान्ति और निर्भयता सम्भव हो सकेगी।

शेष भाग अगले अंक में......

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्त्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१४ से २१ जून, २०१५- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**

सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पण्डिता रमा बाई के लिये इतना उत्साह:- आर्यसमाज की सेवा तथा वैदिक सिद्धान्तों के लिये जीवन अर्पित करने वाले, संघर्ष करने वाले और दु:ख कष्ट झेलने वाले ज्ञात-अज्ञात ऋषि भक्तों के जीवन पर आर्यसमाज के गिने-चुने पाँच-सात विद्वानों ने प्रशंसनीय व स्मरणीय कार्य किया है। ऐसे पूजनीय पुरुषों का हम ऋण नहीं चुका सकते। इन सब पर कभी एक पठनीय लेख दिया जायेगा। अभी इतना बताना ही पर्याप्त है कि इनमें सबसे ऊपर दो नाम हैं- श्री पं. विष्णुदत्त जी तथा तपोधन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। इनके अनुसन्धान व कार्य की यह भी विशेषता रही है कि इन्होंने आर्य देवियों, अज्ञात समाज सेवियों तथा विस्मृत ऋषि भक्तों पर भी लिखा।

देश विभाजन के पश्चात् आर्यसमाज में अंग्रेजी सोच का कुछ लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि गोरे इतिहास लेखकों ने जिन सुधारकों व संस्थाओं को इतिहास में महत्त्व दिया- उन्हीं व्यक्तियों व नामों की चर्चा व तोता रटन आर्यसमाज में अधिक होने लगी। कभी ऋषि के सम्पर्क में आने वाले पादरियों पर श्री प्रो. महेशप्रसाद जी ने लेख दिये फिर लाला मुरलीधर, श्री अमरावसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, लाला मथुरादास, मास्टर लक्ष्मण जी का तो लोप हो गया। पादरियों को इतना महत्त्व दिया गया कि पं. इन्द्र वर्मा, चन्द्रकवि, पं. रामचन्द्र देहलवी आदि गौण हो गये। पटियाला राजद्रोह में सर्वाधिक यातनायें सहने वाले पटियाला समाज के सेवक आर्यवीर खण्डू सैनी के नाम की खोज हम बड़ी कठिनाई से कर पाये।

किसी आर्य देवी पर तो चार पृष्ठ न लिखे गये और रमा बाई की माला इतनी फिरने लगी कि सती लक्ष्मी का नाम लेवा बस एक जिज्ञासु ही बचा। सुशीला जी विद्यालंकृता, माता सरस्वती, हुतात्मा गोदावरी ईटेकर, हरियाणा की आर्य ललना लाड कँवर और सावित्री देवी को विसार कर रमाबाई पर लेख पर लेख छपने लगे। ग्रन्थों में बिना प्रयोजन उसके चित्र छपने लगे। परोपकारी में प्रमुखता से किसी ने उसका फोटो छपवा दिया। इसे मैं अनावश्यक समझता हूँ।

पं. इन्द्र जी ने लिखा है कि पं. रमाबाई ने पचास सहस्र हिन्दू देवियों को ईसाई बनाया। मैंने कुशलदेव जी को यह प्रामाणिक जानकारी दी। हमारे स्कॉलरों ने यह विनाशकारी इतिहास छुपाने का पाप किया है। देश के एक महान् विचारक और स्वाधीनता सेनानी ने लाला लाजपतराय जी के एक ऐतिहासिक ग्रन्थ के प्राक्कथन में इसी रमाबाई जी के बारे में लिखा है:-

''ईसाई एजेन्ट हिन्दुओं की वेशभूषा पहन कर, तिलक तथा जनेऊ लगा कर वहाँ फिरते हैं और अज्ञान हिन्दू बच्चों को अपने जाल में फँसाते हैं। इसी प्रकार ईसाई स्त्रियाँ हैं **जो पण्डिता रमाबाई की एजेन्ट हैं और हिन्दू कन्याओं को यह कहकर फंसा ले जाती हैं कि चलो तुम्हें पण्डितानी जी के पास ले चलेंगे। वहाँ तुम्हें खाना, कपड़ा सब कुछ मिलेगा।''**

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के मासिक पत्र के सुयोग्य सम्पादक जी ने न जाने हुतात्मा श्याम भाई की माता जी, श्री हरिश्चन्द्र गुरु जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) की माता की उपेक्षा कर पं. रमाबाई पर किस विचार से लेख छापा है?

लाला हरदयाल की खरी-खरी:- लाला हरदयाल आर्यसमाजी नहीं थे। वे नास्तिक थे। महर्षि दयानन्द के बड़े भक्त, सच्चे प्रशंसक तथा परम तपस्वी क्रान्तिकारी थे। आपने लाला लाजपतराय जी के देश से निष्कासन के कुछ समय पश्चात् अपने एक विचारोत्तेजक लेख में आर्यसमाज तथा लाला जी की सेवाओं का गुणगान करते हुए आर्य नेताओं को कुछ खरी-खरी भी सुनाई हैं। लाला हरदयाल की कोटि के तपस्वी त्यागी के विचारों से आज आर्य जनता को लाभान्वित न करना इतिहास शास्त्र से द्रोह है। हिण्डौन से छपी क्रान्तिकारियों की जीवनी की पुस्तक में लाला हरदयाल जी को लेखक ने डी.ए.वी. कॉलेज का पुराना विद्यार्थी बताया है। लाला हरदयाल व भाई परमानन्द जी के अनुसार यह कथन एक शुद्ध गप्प है। लाला हरदयाल जी ने आर्यसमाज की एक महाभयङ्कर भूल पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। कह नहीं सकता कि आर्यसमाज में क्रान्तिकारियों पर जोशील लैक्चर देने वालों को लाला हरदयाल का चिन्तन कैसा लगेगा?

''जब दयानन्द कॉलेज की स्थापना की गई तो उसको विशुद्ध राष्ट्रीय पद्धति से चलाने का विचार उसके संस्थापकों को क्यों न आया? जबकि स्वामी दयानन्द जी वैदिक धर्म की उच्च शिक्षा प्राचीन काल जैसी फैलाना चाहते थे। क्यों इस बात पर विचार न किया गया कि ऐसी संस्था (विश्वविद्यालय) की देखरेख में होना जो वैदिक धर्म को नहीं मानती, ईसाई मत की मानने वाली है। आर्य धर्म के

thearyasamaj.org

सिद्धान्तों के विरुद्ध है परन्तु उस समय जो व्यक्ति अंग्रेजों के शिष्य बनकर अंग्रेजी भाषा के दो अक्षर पढ़ लेते थे, 'वे हमारे जैसा कोई और नहीं' के अहंकार में दूसरों को भी उसी जाल में बन्दी बनवाने का प्रयास करते थे जिसमें वे स्वयं फंस गये थे अत: इस चाल से ग्रजूयेट पर ग्रजूयेट निकलने लगे तथा सरकारी शिक्षा का चाव प्लेग के सदृश फैलने लगा। दयानन्द कॉलेज एफ.ए., बी.ए. आदि उपाधिधारियों के निर्माण की फैक्टरी बना कर लाला लाजपतराय जी ने जो कॉलेज के पोषक समर्थक तथा संरक्षक रहे हैं, जातीय उन्नति को हानि पहुँचाई और जाति को विश्वविद्यालय के बन्धन में जकड़ दिया.... कैसा अद्‌भुत दृश्य है कि अपने धन से जाति विद्यालय बनाये और वहाँ से निकले सरकारी चाकर तथा वकील, जो कार्य करें अंग्रेजों का।'' इतिहास का यह पक्ष जो ओझल रहा, सामने लाने की इच्छा से हमने यहाँ रखा है।

मांसाहार, अन्न संकट और संक्रामक जटिल रोग:- बढ़ती जनसंख्या के साथ मंहगाई व अन्न संकट का अटूट सम्बन्ध है। पहले ग्रामों में निर्धन वर्ग को खाते-पीते बड़े घरों से लस्सी मिल जाती थी। लस्सी दही के प्रयोग से अन्न की खपत कम होती है। यह प्रयोग करके देखा जा सकता है। मांस उत्तेजक भोजन है सो मांस खाने वाले भर पेट खाते हैं। अन्न की इनके मांसाहार से खपत बढ़ती है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने Humanitarian Diet पुस्तक में लिखा है मांसाहारियों व शाकाहारियों के कुछ छोटे-छोटे बच्चों को लेकर प्रयोग करके देख लें कि मनुष्य का स्वाभाविक भोजन क्या है। एक हॉल में एक ओर मांसाहारी भोजन, अण्डे आदि बनाकर रख दें और दूसरी ओर फल, शाक, भाजी, दूध, दही से बने पदार्थ रखें फिर देखें सब बच्चे शाक, फल आदि की ओर खिचकर जायेंगे। मांस आदि की ओर नहीं।

थके टूटे मनुष्य थकान दूर करने के लिये वन, उपवन, पार्कों में तो घूमने-फिरने जाते हैं। क्या कभी कोई मांस की मण्डी अथवा कसाई घर का आनन्द लेने भी जाता देखा गया है? इससे सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी के रूप में उत्पन्न किया है। इस्लाम व ईसाई मान्यता यह है कि हजरत आदम तथा हौआ को स्वर्ग के उद्यान में बनाया गया था। उन्हें भूमि से उगे अन्न, वनस्पतियों, फलों के सेवन का आदेश दिया गया था। वहाँ बूचड़खाने थे ही नहीं। सर सैयद भी मानते हैं कि आदम का भोजन शाकाहार निश्चित किया गया। वेद मन्त्रों में अन्न, जल, वायु, नदियों, पेड़ों, सूर्य, चन्द्र, भूमि, द्यूलोक, अन्तरिक्ष सबके सुखदायी व कल्याणकारी होने की प्रार्थनायें हैं। पशु, पक्षियों, जन्तुओं, जलचरों व पेड़ों, पर्वतों तथा नदियों के संहार से संक्रामक रोग बढ़ते जा रहे हैं। केवल मनुष्य का ही जीने का अधिकार है, यह सोच एकांगी है। सब योनियाँ एक दूसरे की सहयोगी व पूरक हैं। अस्पताल बढ़ाने व नई-नई खाद फैक्ट्रियों ने सुख बढ़ाया नहीं, शोर, धन व सम्पदा को बढ़ावा दिया और रोग पहले से कहीं जटिल व भयंकर होते जा रहे हैं।

पं. लेखराम जी का बलिदान दिन?:- टाईप छोटा होने से मैं पत्रों व छोटे टाईप की पुस्तकों को नहीं पढ़ता परन्तु श्री आर्यमुनि जी मेरठ के वैदिक पथ में छपे दो लेख जैसे-तैसे पढ़ गया। पिछली आयु में आपकी परिश्रमशीलता प्रशंसा योग्य है। **आपने पं. लेखराम जी का बलिदान ईद के दिन होना लिखा है। यह बहुत बड़ी भूल है।** पण्डित जी के बलिदान की घटना पर हमारे विद्वानों के मिज़ाईयों से अनेक शास्त्रार्थ हुए हैं। लिखित भी और मौखिक भी। यह घटना केवल दिन, वार व तिथि से मत आंकी जावे। मिर्ज़ा कादियानी ने शब्दों व वाक्यों में हेरफेर, तोड़-मरोड़ करके इसको अल्लाह के साथ नत्थी किया है। वह इसे ईद से भी जोड़ता है जो विशुद्ध धोखाधड़ी है। श्रीयुत् आर्यमुनि जी ने कहीं किसी लेख में आधी-अधूरी बात पढ़कर ईद वाला मिर्जाई भ्रम पाल लिया है। छह मार्च को शनिवार था। **ईद पाँच मार्च को शुक्रवार के दिन थी। मिर्जा के इलहामों में ईद के दिन की गोलमोल चर्चा है सो आर्यमुनि जी के लेख से मिर्जाई गदगद होंगे।**

घटना सायं छह बजे के लगभग हुई और वह भी ईद के अगले दिन। पण्डित जी ने प्राण त्यागे रात्रि एक बजे के पश्चात् जब सात मार्च को रविवार था। **चतुर मिर्जा ने रविवार को 'आर्यों की हिन्दुओं की ईद' लिखकर नई गढ़न्त गढ़ी। यह भी शुद्ध गप्प है। हिन्दुओं ने कब रविवार को अपनी ईद कहा व लिखा?** पं. देवप्रकाश जी, पं. शान्तिप्रकाश जी तथा इस सेवक ने इसका विस्तृत विवेचन अपने साहित्य में किया है। पण्डित लेखराम जी का जन्म स्थान सैदपुर ग्राम ही था। यह ठीक नहीं कि उसे सैय्यदपुर भी कहा जाता था। यह नोट करना चाहिये।

स्वामी वेदानन्द जी अमृतसर नहीं कादियाँ आकर ठहरे:- वैदिक पथ के इसी अंक में आर्यमुनि जी ने पूज्यपाद स्वामी वेदानन्द जी पर बहुत परिश्रम करके एक अच्छा लेख लिखा है। इसमें एक चूक को श्री आर्यमुनि जी ने आगे प्रसारित कर दिया है। परोपकारी में भी लिखा था और हिण्डौन से छपी एक पुस्तक में भी सप्रमाण

thearyasamaj.org

लिखा था। स्वामी जी देश विभाजन के पश्चात् अमृतसर नहीं ठहरे। कुछ रुके तो अवश्य। अमृतसर ही लाहौर से आना सुविधाजनक था। अमृतसर से आप कादियाँ आये। वहाँ बहुत लम्बे समय तक रुके। गाड़ियाँ बन्द थीं। मैं नित्य प्रति दो, तीन और चार बार भी उनके डेरे पर दर्शन करने, शंका समाधान करने जाया करता था। जैसे व्यक्ति टी.वी. में घटित घटना को अपनी आँखों से, सामने बैठकर देखता है। मुझे महाराज की कादियाँ की एक-एक घटना ज्यों की त्यों आज भी याद है। वे घटनायें आज भी मेरे नयनों के सामने घूमती हैं। स्वामी जी नवम्बर के मध्य तक कादियाँ अवश्य रहे। उनकी काली कम्बली मैं भूल नहीं सकता। मेरे सामने हमारे घर में मेरी माता ने उन्हें सरसों का शाक व मक्की की रोटी परोसी। सरसों का शाक अक्टूबर के अन्त तक ही प्राप्य होता है।

लगे हाथ तीन बातें और लिख दूँ। मैंने सबसे पहले महाराज वेदानन्द की कोटि से शंका समाधान करके- यह कला कुछ-कुछ सीखी। स्वामी जी महाराज की एक लघु पुस्तक का संस्कृत से हिन्दी अनुवाद स्वामी आत्मानन्द जी ने किया। उसमें आपको गुरुवर्य लिखा है। स्वामी आत्मानन्द आयु में बड़े थे। वे भी काशी में पढ़े। हो सकता है वहीं कोई शास्त्र वेदानन्द जी से भी पढ़ा हो। स्वामी जी बहुत बड़े पत्रकार व अनुवादक भी थे। **स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सर्वप्रथम आपसे ही संन्यास विषय पर चर्चा की थी।** एक बार ब्र. जगदीश विद्यार्थी से कहा, 'गुरुकुल सुराही देखा है?' ब्रह्मचारी बोले, 'कांगड़ी, कुरुक्षेत्र आदि के गुरुकुल तो सुने हैं, यह सुराही गुरुकुल किस प्रदेश में है?' स्वामी वेदानन्द बोले, अरे फिर तुम क्या आर्यसमाजी हो जो गुरुकुल सुराही भी नहीं देखा? ब्रह्मचारी बोले, कहाँ है वह गुरुकुल? मैं अवश्य देखकर आऊँगा। स्वामी जी बोले, 'रोहतक जाकर रेवाड़ी जाने वाली बस पर बैठ जाना। झज्जर उतर जाना। दो मील पैदल चलकर गुरुकुल पहुँच जाओगे।' ऐसे हंसोड़ थे स्वामी जी महाराज।

श्रीयुत् अभय का लेखः- अभय जी एक पुरुषार्थी, स्वाध्यायशील, सिद्धान्तनिष्ठ आर्यवीर हैं। आपके पिता जी भी उच्च शिक्षित बहुत स्वाध्याय प्रेमी आर्य पुरुष हैं। आपके एक लेख की चर्चा करते हुए एक भाई ने कुछ लिखने की प्रेरणा दी है। अभय जी ने राधास्वामी सज्जनों द्वारा किये जा रहे इस प्रचार का निराकरण करने का यत्न किया है कि ऋषि दयानन्द जी ने बाबा शिवदयाल से इस मत की दीक्षा ली थी। कोई तथ्य व प्रमाण देकर इस मनगढ़न्त कहानी का निराकरण करना चाहिये था। वैसे यह तो अच्छी बात है कि **राधास्वामियों में ऋषि दयानन्द का इतना आकर्षण बढ़ा है कि वे उनकी निरन्तर चर्चा करते चले आ रहे हैं।** परोपकारी में इस निराधार कथन का सप्रमाण प्रतिवाद किया जा चुका है। श्री अभय जी ने लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जीवन के प्रसार में अच्छा उद्यम किया है परन्तु इस लेख से ऐसा लगा कि आप अपनी व्यस्तता के कारण उस ग्रन्थ में एतद्विषयक टिप्पणियों को नहीं पढ़ पाये। लीजिये कुछ तथ्य विचारार्थ फिर रखते हैं:

१. राधास्वामी बड़ा बल देकर यह कहते हैं कि ऋषि ने हमारे मत की कभी समीक्षा या खण्डन नहीं किया। उनका यह मत इतिहास शास्त्र पर बहुत बड़ा बोझा है। वैसे आर्यसमाजियों ने भी ध्यान से ऋषि के जालन्धर शास्त्रार्थ को पढ़ा होता तो इन्हें याद दिलाते कि उस शास्त्रार्थ में चमत्कारों को सृष्टि नियम विरुद्ध होने से ऋषि ने झुठलाते हुए बाबा शिवदयाल जी का भी नाम लिया है। यह घटना मुसलमानों ने भी छपवाई थी। कोई भी पढ़कर जाँच-परख कर ले।

२. राधा स्वामी मत के आरम्भिक काल के तीन गुरुओं की पुस्तकों में ऋषि की चर्चा है। किसी ने इस गढ़न्त का संकेत नहीं किया। उनके निधन के बाद यह हदीस किसके दिमाग की उपज है? इसका पता राधास्वामी ही लगा सकते हैं।

३. राधास्वामी गुरु हजूर जी महाराज ने ऋषि का जीवन भी लिखा है। वह ऋषि के समकालीन भी थे। उनकी पुस्तक (ऋषि-जीवन) में भी इसकी गन्ध नहीं। अब राधास्वामी भाई अपनी इस हदीस पर हठ करें तो इन्हें कौन समझावे?

४. व्यास डेरा के संस्थापक गुरु बाबा सावनसिंह जी की पुस्तक में ऋषि की चर्चा तो है परन्तु यह हदीस कहीं नहीं। आप पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के बहुत प्रेमी थे। आपने भी स्वामी जी को यह कहानी कभी नहीं सुनाई। उनके स्वामी जी के सम्बन्धों की घनिष्ठता की एक घटना देना उपयोगी रहेगा। मैं इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी हूँ। स्वामी जी के निधन के कुछ ही सप्ताह पश्चात् डेरा व्यास से बाबा जी ने एक चेली दीनानगर स्वामी जी के आश्रम भेजी। वह औषधालय खुलते ही मठ में पहुँच गई। स्वामी सर्वानन्द जी रोगियों को देख रहे थे। मैं भी वहीं बैठा था। उस माता ने खड़े-खड़े कहा, 'मुझे बाबा सावनसिंह जी ने डेरा व्यास से भेजा है। मैंने मट (मठ को मट बोलती थी) वाले बाबा जी से दवाई लेनी है।' हम सबने कहा, 'बैठ जा। स्वामी सर्वानन्द जी की ओर संकेत करते हुए बताया

thearyasamaj.org

कि तेरी बारी पर स्वामी जी तुम्हें दवाई दे देंगे।'

खड़े-खड़े उस भोली-भाली माता ने अपनी बाहें फैलाते हुए कहा, 'मैं इनसे दवाई नहीं लूंगी। मैं तो मट वाले बाबा जी से ही (बाहें फैलाकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की विशाल काया का संकेत करके बताया) दवाई लूँगी।' हम सबने कहा, 'वह बाबा जी तो चल बसे हैं। दवाई तो यही दिया करते हैं।' उसके हावभाव देखकर स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा, 'वह बाबा जी तो बहुत विशालकाय वाले, लम्बे-चौड़े थे। उन्हें चेला ही सूखा-सड़ा मिला।' यह घटना मेरी कई पुस्तकों में छपती रही है। तात्पर्य यह है कि बाबा सावनसिंह जी ने इतनी घनिष्ठता होने पर भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का यह घटना कभी नहीं सुनाई। यह कहानी सर्वथा निराधार है।

आर्यो! हदीसकारों से बचो:- यह देखकर आश्चर्य व दु:ख होता है कि गत चालीस-पचास वर्षों में आर्यसमाज में हदीसकार पैदा होने लगे हैं। नई-नई हास्यास्पद हदीसें गढ़ी जा रही हैं और इतिहास को जहाँ प्रदूषित करने के लिए प्रक्षेप किया जाने लगा है वहीं पर स्वामी वेदानन्द जी के शब्दों में बहुत-सी शिक्षाप्रद प्रेरक घटनाओं की 'हटावट' होने लगी है। मिलावट व हटावट ये दोनों ही शास्त्रघाती षड्यन्त्र हैं। मुझे इस षड्यन्त्र पर इतिहास प्रदूषण पर एक पुस्तक लिखनी पड़ेगी।

मनुष्यों में यह बहुत बड़ी दुर्बलता पाई जाती है कि वे अपने काल के अथवा थोड़ा समय पहले के महापुरुषों के बारे में कल्पित कहानियाँ बनाकर उनके बहाने स्वयं की महिमा बढ़ाने की लालसा पाल लेते हैं। एक मुस्लिम विद्वान् ने इसका उदाहरण देते हुए लिखा है कि हजरत आयशा सबसे थोड़ा समय पैगम्बर मुहम्मद के संग रहीं परन्तु सर्वाधिक हदीसें उन्हीं के द्वारा वर्णित हैं।

स्वामी भीष्म जी ने आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा की। वह इस दृष्टि से अत्यन्त आदरणीय थे। कलायत (नरवाना के समीप) एक बड़े कार्यक्रम में उनके प्रचार में एक बाबा ने माईक पकड़ कर विघ्न डाला। तब मैंने वहीं उस बाबा की बोलती बन्द की और उसे उसके डेरे पर छोड़कर आया। नरवाना के श्री धर्मपाल इस घटना के साक्षी अभी हैं। न जाने उनके प्रचार ने इसी प्रकार कहाँ-कहाँ विरोधियों में खलबली मचाई।

स्वामी जी अन्तिम वेला में अपनी आयु को बढ़ाते गए और आपने ऋषि दयानन्द जी व स्वामी श्रद्धानन्द जी विषयक कई कहानियाँ रच दीं। यह दु:खद बात थी। 'एक विलक्षण व्यक्तित्व' एक पठनीय लेख संग्रह है। इसमें भीष्म जी का लेख डॉ. विनोदचन्द्र जी ने बिना विचारे दे दिया। जाँच की ही नहीं। इससे पूर्व आर्यमित्र, प्रताप, अर्जुन, सार्वदेशिक, आर्य, शुद्धि सभा के मुखपत्र आदि के स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अंक में स्वामी भीष्म का लेख कभी छपा हो तो कोई बतावे। एकदम इतने महत्त्वपूर्ण संस्मरण कैसे फूट पड़े? स्वामी जी के बलिदान से बीस वर्ष पहले के पत्रों में स्वामी श्रद्धानन्द जी से सम्बन्धित उनका एक भी समाचार नहीं मिलता।

इस लेख की हास्यास्पद कौन-कौन सी बात पर रोयें? **तबलीग़** नाम की तो कोई संस्था ही नहीं थी। इस शब्द का अर्थ तो मात्र प्रचार है। स्वामी जी ने सन् १९५७ में मुझे अपने संस्मरण सुनाये। मैंने भी बहुत कुछ पूछा। भीष्म जी ने इनमें से एक भी संस्मरण तब इस सेवक को नहीं सुनाया था।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना में भीष्म जी के सहयोग की कहानी न तो सत्यदेव जी ने, न ही महाशय कृष्ण जी, न ही इन्द्र जी ने कहीं लिखी है। पं. हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार इसी गुरुकुल में पढ़ाते रहे। पं. बुद्धदेव जी के पिता यहीं पर अध्यापक थे। हमने न हरिशरण जी, न ही बुद्धदेव जी से यह इतिहास सुना। गुरुकुल के सब अध्यापक और सब ब्रह्मचारी अंग्रेज ने जेल में डाल दिये। इस घटना की सभा के इतिहास लेखक पं. चमूपति जी को और हीरक जयन्ती स्मारिका के सम्पादक स्वामी वेदानन्द जी को भनक तक न पड़ी। मेरी पुकार यही है कि आर्यो! हदीसों से बचो।

ऐसा कभी नहीं होता था:- दक्षिण भारतीय एक नेता ने लगभग ८५-८६ वर्ष पूर्व यह कहा था कि उत्तर भारत में अब कहीं भी धर्म चर्चा करो झट से आगे से प्रश्न पूछा जाता है, 'वेद में ऐसा कहाँ लिखा है? बात-बात पर वेद का प्रमाण माँगा जाता है। ऐसा ऋषि दयानन्द के पुण्य प्रताप से हुआ है' वेद तथा ऋषिकृत ग्रन्थों व ऋषि जीवन के प्रमाण अल्पशिक्षित आर्य भी माँगते थे। गत चालीस वर्षों में भी यहाँ-वहाँ नये-नये आश्रम व गुरुकुल विद्यालय महात्मा लोग चलाने लगे। इनके विज्ञापनों, कैलण्डरों, साहित्य आदि में इन्हीं के बाबा जी का फोटो मिलेगा। इनके डेरों के भीतर-बाहर भी इन्हीं का फोटो। हमने चालीस वर्ष पूर्व यमुनानगर, दीनानगर, गाजियाबाद में केवल ऋषि के चित्र देखे। अब वेद और ऋषि से बड़े अपने-अपने बाबे बनाये जा रहे हैं। अपनी ही जयन्तियाँ, अपने ही दिवस। नवीन पन्थों की सृष्टि होने लगी है।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रबचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

मेरे गुरुवर (२)

- आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री

ईश्वर मञ्च का विषय नहीं- एक बार एक आस्तिकम्मन्य विख्यात ईश्वरभक्त आचार्य, जिन्होंने सन् १९८९ के आसपास गुरुदेव से ही बहालगढ़ में बाह्य छात्र के रूप में महाभाष्य का श्रवण किया था, वे गुरुवर से मिलने के लिए रेवली (पाणिनि महाविद्यालय) में आये। उनके मस्तिष्क में गुरुवर के प्रति नास्तिकत्व का भाव बना/बनाया हुआ था। कुशल-क्षेम आदि अनेक व्यावहारिक प्रसङ्गों के बाद छात्रचर आगन्तुक आचार्य गुरुवर से बोले- आचार्य जी! आपने वैदिक वाङ्मय के ग्रन्थों में तो पर्याप्त परिश्रम किया, इसके साथ यदि ईश्वरभक्ति और आध्यात्मिकता भी होती तो कितना अच्छा होता! फिर आपने गुरुवर को ईश्वरभक्ति के लाभ भी बताये। गुरुवर चुपचाप शान्ति से प्रवचन सुनकर धैर्यपूर्वक बोले- महोदय! जो व्यक्ति दिन-रात मञ्च से ईश्वर, ईश्वर चिल्लाते हैं, ईश्वर केवल उन्हीं के पास नहीं होता। हम जैसे लोग जो मूक रूप से वेद विहित ईश्वर की आज्ञाओं को आचरण में लाने का प्रयास करते हैं, सर्वव्यापक होने से ईश्वर उनके पास भी रहता है। कुछ लोगों ने ईश्वर को भी अपने जीवन का धन्धा बनाया हुआ है और वे समझते हैं कि हम ही संसार में सबसे बड़े ईश्वरभक्त और आध्यात्मिक अथवा आस्तिक पुरुष हैं, अन्य कोई नहीं। ऐसा सुनकर आगन्तुक आचार्य के पास मौन रहने के अतिरिक्त कोई उपाय न था।

कुछेक शास्त्र विरोधी व्यक्तियों का तो जैसे यह एक जीवन-लक्ष्य रहा है कि बहालगढ़-परम्परा को नास्तिक घोषित करना और इस कार्य को वे पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से करते आये हैं। अपने पास आने वाले छात्रों को सावधान करते हुए कहते हैं कि- यदि अध्ययन के लिए बहालगढ़ जाना ही हो तो वहाँ आचार्य की नास्तिकता से प्रभावित मत हो जाना, अपने शास्त्राध्ययन के अतिरिक्त अधिक सम्पर्क नहीं रखना। कुछेक तो बहालगढ़ जाने से ही सीधा निषेध करते हैं। इसका एक उदाहरण है- आचार्य विवेक चैतन्य। वे कहते हैं कि-मेरे अन्दर मेरे शिक्षकों ने आचार्य विजयपाल जी, बहालगढ़ के प्रति नास्तिक, कहकर विपरीत भाव कूट-कूट कर भर दिये थे। इस के कारण मैंने संकल्प कर लिया था कि कहीं भी चला जाऊँ, चाहे विद्या पढ़े बिना रह जाऊँ, लेकिन बहालगढ़ तो भूलकर भी नहीं जाऊँगा इसी संकल्प के साथ मैं कई वर्ष तक इधर-उधर भटकता रहा। एक दिन स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज कुरुक्षेत्र से भेंट हुई। उनसे मैंने वेदादि शास्त्रों को पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने एकदम कहा कि पढ़ना है तो बहालगढ़ जाओ। स्वामी जी से भी मैंने यही कहा- बहालगढ़ के अतिरिक्त कोई स्थान हो तो बताओ, मैं बहालगढ़ जाकर नास्तिक नहीं बनना चाहता। स्वामी जी बोले, अरे! एक बार चलो तो। तब मैं अपने मन पर पत्थर रखकर स्वामी के साथ बहालगढ़ आया। धीरे-धीरे आचार्य जी के निकट रहकर उनके जीवन को जानने का अवसर मिला तो पाया कि आचार्य जी उच्च कोटि के आस्तिक ही नहीं बल्कि ये तो देवपुरुष हैं। यदि ये नास्तिक हैं, तब तो संसार में कोई भी आस्तिक नहीं है। वे लोग कितने बड़े पापी हैं जो आचार्य जी के विषय में ऐसा गर्हित दुष्प्रचार करके छात्रों को भ्रमित कर रहे हैं।

वस्तुत: गुरुवर अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान, प्रत्याहार आदि योगाङ्गों का साक्षात् मूर्त्तरूप थे। एक व्यक्ति प्रात: से सायं तक समाहित चित्त होकर शास्त्राभ्यास में संलग्न है, क्या यह स्थिति किसी समाधिस्थ से कम है? इस बात का अनुभव उनके निकट रहने वाले उनके अन्तेवासी ही कर सकते हैं। क्योंकि गुरुदेव के जीवन में प्रदर्शन तो नाममात्र का भी नहीं था।

मैंने किसी पर कोई उपकार नहीं किया- एक बार रेवली में निकटवर्ती शहर से कुछ प्रतिष्ठित आर्य लोग गुरुवर के पास आये। कुशल-क्षेम आदि औपचारिकताओं के पश्चात् वे गुरुवर से बोले- आचार्य जी! आपने दिन-रात एक करके बना किसी निजी स्वार्थ के वेद और आर्यसमाज की बहुत सेवा की है। इसके लिए आर्यसमाज आपका चिरकाल तक ऋणी रहेगा, आदि-आदि गुरुवर की प्रशस्ति में उन्होंने पर्याप्त बल प्रयुक्त किया और अन्त में बोले कि इसलिए हमारी इच्छा है कि अमुक समाज की ओर से इस वर्ष आपको सम्मानित किया जाये। आगन्तुकों की सभी बातें स्नेहपूर्वक सुनकर गुरुदेव अभिमुख होकर बोले- आप शायद किसी गलत व्यक्ति के पास आ गये हैं। क्योंकि मैंने इनमें से कोई भी कार्य नहीं किया जो आप लोगों ने गिनाये हैं। ना ही मैंने किसी पर कोई उपकार किया है। मैं तो गुरु जी पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु की आज्ञा

thearyasamaj.org

और आत्मतुष्टि के लिए यह सब कर रहा हूँ और जितना मुझे मालूम है तो मेरे द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं हो रहा जिसके लिए मुझे सम्मानित किया जाये। हाँ, जो समाज/राष्ट्र के हित में संलग्न हैं उन महापुरुषों का सम्मान अवश्य होना चाहिए। आगन्तुकों द्वारा अनेकाश: अनुनय-विनय करने पर भी आप सम्मान हेतु तैयार नहीं हुए।

इस प्रकार गुरुदेव **सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यम् उद्विजेत विषादिव** इस मनुवाक्य के जीवन्त रूप थे। ऐसे अनेक प्रसङ्ग गुरुदेव के जीवन में आते रहे और गुरुदेव उन्हें सदैव विषसम्पृक्त अन्नवत् हेय ही समझते रहे।

जीवन में ढ़ाई सुख- एक बार मैं और आचार्य विवेक चैतन्य जी गुरुवर के पास खड़े हुए उनके सुख-दु:ख एवं स्वास्थ्य आदि की चर्चा कर रहे थे। तभी गुरुदेव बोले-देखो भई! जीवन में कुल मिलाकर ढ़ाई सुख है। आचार्य विवेक जी द्वारा जिज्ञासा प्रकट करने पर गुरुदेव पुन: बोले-एक तो समय पर भूख लगना, दूसरा समय पर नींद आना, इन दो के अतिरिक्त जितने भी सांसारिक सुख हैं वे सब के सब आधे के अन्दर हैं। प्रदीप के पास ये सभी सुख हैं (उस समय मेरा विवाह हो चुका था- लेखक) और मैं इन सभी से वञ्चित हूँ। देखो, न तो ठीक से भूख लगती है और ना ही समय पर नींद आती है, बाकी दूसरे सांसारिक सुख तो हमसे कोसों दूर हैं। वस्तुत: गुरुवर तो इन सभी सुखों से ऊपर शाश्वत सुख की ओर उन्मुख थे।

यहाँ तो सब गधे आते हैं- मन्त्री (जीवनराम) जी का स्वभाव प्राय: उग्रता बहुल था जबकि गुरुवर सौम्य स्वभाव के थे। एक तरह से कहें तो दोनों '**अग्निसोमात्कं जगत्**' का उदाहरण रूप थे। छात्रों की किसी न किसी त्रुटि को लेकर छात्रों के साथ मन्त्री जी की प्राय: कहासुनी चलती रहती थी। कभी-कभी तो मन्त्री जी को इतना आवेश आ जाता था कि वे गुरुवर तक पहुँच जाते थे और वहाँ अपना रौद्र रूप प्रकट करते हुए कहते कि- आप कैसे आचार्य हैं? कैसे-कैसे छात्रों को आपने यहाँ पाल रखा है? मेरा वश चले तो मैं तो सबको इसी समय कान पकड़कर बाहर कर दूँ। आदि-आदि जो कुछ भी वे उस समय कह सकते थे, वह सब कह दिया करते थे और गुरुवर '**अनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति**' के समान शान्तमुद्रा में चुपचाप सुनते रहते थे और जब देखते कि अब मन्त्री जी का पारा उतर गया है, तब अत्यन्त स्निग्ध भाव से सम्बोधित करते कि-मन्त्री जी। इन मूर्खों के लिए आप इतना क्यों परेशान होते हैं? और वैसे भी यहाँ तो सब गधे आते हैं, यदि उन्हें इंसान बना सके तो इसमें ही हमारी सफलता है। इस तरह कान पकड़-पकड़ कर सबको निकालते रहेंगे तो हम यहाँ किसलिए बैठे हैं? आप सोचते हैं, सारे अच्छे-अच्छे छात्र यहाँ आयें, तो ऐसा कैसे हो सकता है?

वैसे गुरुवर हम लोगों को भी प्राय: समझाते रहते थे कि जब कभी मन्त्री जी को आवेश आये और वे कुछ बोलें तो तुम लोग भी चुपचाप बिना कुछ बोले सुन लिया करो। मन्त्री जी का आवेश दूध के उबाल की तरह क्षणिक होता है और हमारी किसी त्रुटि पर उनका गुस्सा होना स्वाभाविक है, इस संस्था को इन्होंने अपने खून-पसीने से सींचा है। गुरु (ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) जी के बाद यह संस्था इन्हीं की बदौलत आज तक चल रही है। मैं तो मात्र पढ़ने-पढ़ाने तक ही सीमित रहा हूँ। संस्था की अन्य सभी गतिविधियों के केन्द्र मन्त्री जी ही हैं। मैं इन्हें किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता। इस तरह दोनों के मध्य परस्पर अविनाभाव सम्बन्ध था।

गधा-पच्चीसी- गुरुदेव प्राय: कहा करते थे कि ये जो पन्द्रह से पच्चीस वर्ष के बीच की उम्र है, इसमें व्यक्ति की अपनी बुद्धि तो विकसित होती नहीं है और दूसरे किसी अनुभवी की वो मानता नहीं है। वो सोचता है कि मेरे से बढ़कर इस दुनिया में कोई भी समझदार नहीं है, मेरे सामने सब बेवकूफ हैं। जबकि असलियत यह है कि वो है एकदम गधा। इसीलिए तो गुरु (ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) जी इस उम्र को गधा पच्चीसी कहा करते थे।

जूते भी खायेगा, प्याज भी- जब कभी कोई छात्र ज्वरादि से रुग्ण होता और चिकित्सा के लिए डॉक्टर के पास जाने के लिए कहने पर भी कहता कि मैं तो अमुक वटी, चूर्ण आदि खाकर अथवा उपवास-कुञ्जल आदि करके ही ठीक हो जाऊँगा। तो ऐसे प्रसङ्ग में गुरुदेव प्राय: उपहास की मुद्रा में होकर कहा करते थे कि यह जूते भी खायेगा और प्याज भी। इसका रहस्य पूछने पर गुरुदेव बताते कि-एक बार किसी व्यक्ति को दण्डित करते हुए दण्डाधिकारी ने उसके सामने दो विकल्प रखे कि या तो सौ जूते खा या फिर सौ प्याज खालो। उसने प्याज खाने शुरु किये, लेकिन दस-बारह प्याज खाते-खाते ही उसकी दुर्गति हो गई, आँखों से/नाक से पानी-पानी। तौबा करके बोला- साब जी! मैं तो जूते ही खाऊँगा। जब जूते पड़ने लगे और उनके दर्द से परेशान होने लगा तो बोला- साब जी! इनसे तो प्याज ही ठीक हैं। इस तरह जूते-प्याज,

thearyasamaj.org

जूते-प्याज करते-करते वो बारी-बारी से दोनों ही खा गया। ऐसे ही यह पहले अपने टोने-टोटके करेगा, इनसे परेशन होकर फिर डॉक्टर के पास जायेगा।

प्याज के छिलके- जब कभी दो छात्रों में किसी बात को लेकर परस्पर विवाद होता और दानों ही निर्णय के लिए गुरुदेव के पास आकर अपनी-अपनी दलीलें, तर्क तथा एक-दूसरे के दोष प्रभूत मात्रा में प्रस्तुत करते। जब सुनते-सुनते काफी देर हो जाती और दोनों पक्षों की प्रबलता के कारण कोई एक तरफा फैसला न होते देखते तो तब गुरुदेव दोनों को ही स्नेह से समझाते कि- देखों भई! तुम दोनों की बातें तो प्याज के छिलके की तरह हैं, जैसे प्याज के छिलके उतारते-उतारते अन्ततः कुछ नहीं मिलता, वैसे ही तुम्हारी इन दलीलों में भी अन्ततः कुछ हासिल होने वाला नहीं है। अच्छा यही होगा कि दोनों अपने-अपने काम पर ध्यान दो और भी जो कुछ प्रसङ्ग और समय के अनुकूल होता, दोनों को समझाकर भेज दिया करते थे।

शिष्य ऊपर गुरु नीचे- एक बार कोई विदेशी व्यक्ति गुरुवर से कुछ अध्ययन हेतु विद्यालय में आया। जब अध्ययन (पाठ) का समय हुआ तो गुरुदेव तो दैनन्दिन रूप से उच्चासन (कुर्सी आदि) पर बैठे हुए थे। आगन्तुक विदेशी विद्यार्थी ने गुरुदेव से पूछा- मैं कहाँ बैठूँ? (क्योंकि वहाँ उच्चासन एक ही था) गुरुदेव ने जमीन परबिछे आसन की ओर संकेत कर कहा- यहाँ। विद्यार्थी को बड़ा अटपटा सा लगा और बोला- जमीन पर। गुरुदेव बोले- हाँ जमीन पर। (भारत में) तो यही परम्परा है कि पढ़ाने वाला ऊपर बैठता है तथा पढ़ने वाला नीचे जमीन पर। विद्यार्थी बोला- नहीं मैं तो जमीन पर नहीं बैठ सकता? तब गुरुदेव सहज, स्वाभाविक मुद्रा में बोले- तो फिर मैं जमीन पर बैठ जाता हूँ और आप ऊपर बैठिये, क्योंकि मुझे जमीन पर बैठने में कोई परेशानी नहीं है। विद्यार्थी बोला- हाँ, यह ठीक है। तब गुरुदेव ने नीचे बैठकर ही उसे पढ़ाया। यह है विनम्रता की पराकाष्ठा।

स्वप्न में मायावती- एक दिन प्रातः भ्रमण के समय गुरुदेव बोले- आज रात में बड़ा ही विचित्र सा स्वप्न आया। मैं उसके कारण पर विचार कर रहा हूँ कि वह मुझे आया क्यों? लेकिन मूल पर नहीं पहुँच पा रहा हूँ। मैंने पूछा- क्या स्वप्न था? तो गुरुदेव स्वल्प स्मितवदन होकर बोले- आज मेरे स्वप्न में मायावती आयीं (उस समय मायावती उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री थीं- लेखक)। उनके साथ उनके पी.ए. आदि कई अन्य लोग भी थे। मैं अपने तख्त पर बैठा था और मायावती ठीक मेरे सामने कुर्सी पर बैठकर मेरा हालचाल पूछ रहीं थीं। उनके पी.ए. बीच-बीच में कमरे के कोने में पान/तम्बाखू की पीकें मार रहे थे, जिनसे कमरे के कोने लाल-लाल हो गये। उस समय मुझे बहुत क्रोध भी आ रहा था कि देखो, इतने पढ़े-लिखे और ऊँचे पद पर होते हुए भी कितने असभ्य और अशालीन है? इन्हें यही नहीं मालूम कि पीक कहाँ मारनी चाहिए या कहाँ नहीं? लेकिन मैं मायावती की शर्म के कारण चुप रहा। फिर थोड़ी देर बाद मेरी आँखें ही खुल गई। मैं तभी से सोच रहा हूँ कि आखिर ऐसा विचित्र स्वप्न मुझे आया क्यों? फिर थोड़ी देर मौन भ्रमण करने के पश्चत् गुरुदेव स्वयं बोले- ओहो। अब समझ में आया। कहीं न कहीं मेरे अन्दर यह बात दबी पड़ी है कि बड़े-बड़े लोग मुझसे मिलने आयें, मेरा हाल-चाल पूछें। लगता है उसी का परिणाम यह स्वप्न है। अपनी मनोवृत्तियों पर कितनी गहरी पकड़ थी गुरुदेव की?

पुत्रैषणा- एक दिन प्रातः भ्रमण के समय ही बातों ही बातों में पुत्रैषणा के ऊपर चर्चा चल पड़ी। गुरुदेव बोले- बहुत से लोगों को यह भ्रम रहता है कि हमने जीवन भर अविवाहित रहने का संकल्प कर लिया तो हमने पुत्रैषणा पर विजय प्राप्त कर ली। क्या एषणाओं पर विजय प्राप्त करना इतना सरल है? वस्तुतः पुत्रैषणा है क्या? मेरे बाद भी संसार में लोग मुझे जानें, यह इच्छा होना ही तो पुत्रैषणा है। फिर मैंने जिज्ञासा प्रकट की कि- ऐसे तो ये जो आजकल गुरुकुलों में अविवाहित आचार्य नवप्रविष्ट छात्रों को अपने नाम के अनुकूल, कोई वेद से, कोई देव से तो कोई व्रत से नाम परिवर्त्तन करते हैं अथवा कोई-कोई तो वानप्रस्थ या संन्यास की दीक्षा देने वाले दीक्षागुरु भी ऐसा आचरण करते देखे जाते हैं, तो ये सब भी पुत्रैषणा से ग्रस्त हैं? क्योंकि इन सबके मन में भी तो कहीं न कहीं यही भाव रहता होगा कि संसार के लोगों को ज्ञात होना चहिए कि अमुक व्यक्ति मेरा शिष्य/अनुचर है। गुरुदेव बोले- और क्या? जैसे प्रत्येक पिता स्वयं को स्वपुत्र के रूप में प्रतिष्ठापित करना चाहता है, लगभग वैसे ही प्रत्येक गुरु भी स्वयं को स्वशिष्य के रूप में प्रतिष्ठापित करना चाहता है। मैंने जिज्ञासा व्यक्त की- इस भाव के बिना तो व्यवहार का चलना भी दूभर हो जायेगा? गुरुदेव बोले- अरे भई! इसी का नाम तो संसार है। अपने प्रतिनिधि/उत्तरदायी/उत्तराधिकारी को तैयार करना। आखिर हम भी चाहते हैं न, कि हमारे छात्र खूब मेहनत करके पढ़ें, यह संस्था हमारे बाद भी ऐसे ही चलती

thearyasamaj.org

रहे। यह भी तो पुत्रैषणा ही है। हाँ, उसके सात्त्विक, राजसिक, तामसिक आदि भेद करके व्याख्यात करे तो वह एक अलग बात है, लेकिन पुत्रैषणा से सर्वथा मुक्त तो नहीं हुए ना। यह है किसी भी विषय पर तात्त्विक दृष्टि की वृत्ति।

सर्वविद्याओं का मूलाधार वेद- एक दिन सायङ्कालीन सन्ध्योपासना के पश्चात् चर्चाकाल में एक छात्र ने गुरुदेव के समक्ष जिज्ञासा प्रकट कि-क्या हम आज के दिन विशुद्ध रूप से केवल वेद को आधार बनाकर आधुनिक विकसित विज्ञान को टक्कर देते हुए आधुनिक हवाईजहाज या हैलिकॉप्टर आदि का निर्माण कर सकते हैं, क्योंकि वेद को तो मनु महाराज सर्वज्ञानमय कहते हैं? गुरुदेव बोले- क्या यदि वेद से हवाई जहाज या हैलिकॉप्टर नहीं बनें तो वेदों का सर्वज्ञानमयत्व नहीं होगा? क्या आधुनिक विज्ञान द्वारा खोजे गये उपकरण मिलने पर ही वेदों का सर्वज्ञानमयत्व सिद्ध होगा? देखो, वेद को सभी विद्याओं का मूल स्त्रोत या मूलाधार कहा जाता है। यदि हम आधुनिक विज्ञान के विकसित रूप को वेदों में खोजेंगे तो उसके विकृत रूप को भी स्वीकार करना होगा। जबकि हम उसके विकृत रूप के प्रति तो उसको कोसते हुए नहीं थकते। अब ऐसा नहीं कि अर्धजरतीय न्याय का आश्रय लेकर उसके विकास को तो वेदानुकूल कहकर स्वीकारें और विकार को नहीं, गुलगुले खायें और गुड़ से परहेज करें।

देखो, जब वेदों को सभी विद्याओं का मूल स्रोत कहा जाता है तो इसका तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं कि जो कुछ भी आज उपलब्ध है वह ज्यों का त्यों वेदों में उपलब्ध होना चाहिए, बल्कि वेदों में सभी विद्याएँ मूल रूप में, सूत्र रूप में विद्यमान हैं, ऐसा समझना चाहिए। उनको विकसित या विकृत करना मानव-मस्तिष्क का काम है। जैसे वेद ने कहा कि- '**अग्निर्हिमस्य भेषजम्**' अर्थात् अग्नि शीत का औषध है। ठण्ड लगे तो आग का सेवन करें। अब यहाँ हमें देखना है कि शीत किस प्रकार का है- आन्तरिक या बाह्य? यदि बाह्य है तो स्थूल पार्थिव अग्नि के समीप बैठकर उसे दूर करें और यदि आन्तरिक (ज्वरादि के रूप में) है तो पानी/दूध को गरम करके पियें अथवा अग्नितत्व प्रधान ओषधियों का सेवन करें। यहाँ ऐसा न हो कि जैसे स्थूल अग्नि 'अंगारों' के सेवन से बाह्य ठण्ड दूर होती है तो वेद की आज्ञा मानकर अन्दर की ठण्ड को मिटाने के लिए कोई अंगारे ही खाना शुरू कर दे। अब यहाँ कोई 'पैरासिटामॉल' गोली को वेद में खोजने लगे तो यह तो ठीक नहीं।

कुछ अतिवादी लोगों का यह मिथ्या आग्रह होता है कि 'वेदों में विज्ञान' का मतलब है कि वेदों में आधुनिक विज्ञान भी है। वे यह मानने को कतई तैयार नहीं होते कि आधुनिक साईंस तो वेदगत सूत्ररूप विद्या का विकसित या विकृत रूप है। और विज्ञान का तात्पर्य है विशिष्ट ज्ञान। वह आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक, व्यावहारिक आदि सभी विषयों का है। हमें वेदों को ऋषियों के व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। वेदों के ऊपर मिथ्या आग्रह नहीं थोपने चाहिए।

इसी प्रसङ्ग में एक अन्य छात्र द्वारा भिन्न मनु वाक्य '**सर्वं वेदात् प्रसिध्यति**' को उद्धृत करने पर गुरुदेव बोले-ऐसे स्थलों पर मनु ने केवल सैद्धान्तिक बातों के सूक्ष्म संकेत मात्र की सूचना दी है, न कि उनके विवरणों की। आखिर मानव की बुद्धि के लिए भी कोई अवकाश देंगे या सब कुछ तैयार माल वेद से ही प्राप्त कर लेंगे? क्या स्फुरणशील सात्त्विक बुद्धि से भूत-वर्तमान-भविष्यत् ओझल हो सकेगा?

इस प्रकार मेरे गुरुदेव विद्याव्यसनी होने के कारण प्रायः तो गम्भीर रहते थे लेकिन प्रसङ्ग आने पर मनोविनोद भी भरपूर किया करते थे और आमोद-प्रमोद में ही सृष्टि, ब्रह्माण्ड, ईश्वर, व्यवहार आदि अनेक विषयों के गम्भीर रहस्यों को प्रायः उद्घाटित करते रहते थे। गुरुदेव के जीवन को जानने के लिए उन्हीं के अन्तेवासी रहे, स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तरकाशी) द्वारा लिखित तथा 'रामलाल कपूर ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित गुरुदेव का 'जीवन-परिचय' तथा 'अभिनन्दन ग्रन्थ' अवश्य पढ़ना चाहिए। वैसे 'वेदवाणी' पत्रिका इस वर्ष नवम्बर में गुरुदेव के विषय में विशेषाङ्क भी प्रकाशित करने जा रही है। गुरुदेव का जीवन हम सभी के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

गुरुदेवाय विपाशाय मज्जन्मदीपकाय च।
विद्यायाः समुद्राय विजयपालाय नमो नमः।।

- महर्षि पाणिनि आर्ष गुरुकुल, कुटिया,
नलवीखुर्द, पो. कुञ्जपुरा, करनाल, हरियाणा

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	
१८९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivarana	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

thearyasamaj.org

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
श्री गजानन्द आर्य	
२१७. वेद सौरभ	१००.००
२१८. Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९. मनुस्मृति	३००.००
२२०. महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
सत्यानन्द वेदवागीश:	
२२१. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३. माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४. शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५. शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६. यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७. यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८. उणादिकोष	८०.००
२२९. दयानन्द लहरी	५०.००
प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०. वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१. वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२. वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३. प्रार्थना सुमन	४.००
२३४. ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५. कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६. पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७. प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
२३८. भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९. विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०. वेद सुधा	८.००
२४१. वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२. वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३. वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४. वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५. वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६. Quest for the Infinite	20.00
२४७. वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८. गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९. गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०. गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१. अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२. कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३. कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४. निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५. मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६. कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७. जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८. महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९. श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०. धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
विविध ग्रन्थ	
२६१. नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२. उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३. आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४. मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५. आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६. जीवन का उद्देश्य	२०.००

thearyasamaj.org

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - मानव शरीर के रहस्य **लेखक** - पवमान आलोक

प्रकाशक - आचार्या सुशीला साहित्य संस्थान, पो. गुरुकुल दाधिया, जि. अलवर, राज.

पृष्ठ संख्या - १११ **मूल्य** - ६०/-

संसार में अनेक योनियाँ हैं, जीव जन्तु कीट-पतङ्ग आदि। उनमें सर्वश्रेष्ठ मानव है। मानव शरीर की रचना परमात्मा ने अनुपम रूप से की है। जन्म के साथ उसकी सुरक्षा भोजन की समुचित व्यवस्था की है। अङ्ग-प्रत्यङ्ग की रचना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हर अङ्ग का कार्य क्षेत्र यथा स्थान पर है। प्रत्येक अङ्ग अपना कार्य कर रहा है। ईश्वर की ओर से मनुष्य रूपी शरीर में किसी प्रकार का विकार नहीं किन्तु मानव ही अमूल्य शरीर को गन्दा कर रहा है। अभक्ष्य भेजन, नशीली वस्तुओं के सेवन, दिनचर्या का उपभोग उचित न कर पाने से शरीर रूपी मशीन रोग ग्रस्त हो जाती है। आज का विज्ञान, आयुर्वेद आदि ने रोग का उचित निदान किया है किन्तु व्यक्ति स्वयं ही रोगों को अनुचित आहार-विहार के कारण आमन्त्रित करता है। लेखक अपनी लेखनी से मानव शरीर के रहस्य को, शरीर, यज्ञ, योग पर वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक आधारों पर सिद्ध कर सामग्री प्रस्तुत कर रहा है। प्रत्येक अङ्ग, योग द्वारा स्वास्थ्य, यज्ञ द्वारा स्वास्थ्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया है।

पाठकों को आद्योपान्त अध्ययन कर मनुष्य जीवन को उत्तम बनाये, यह ईश्वर प्रदत्त पुण्य धरोहर है। लेखक का चिन्तन इसी बात का है कि शरीर स्वस्थ कैसे रहे? लेखक की लेखनी का साधुवाद। पाठक अवश्य लाभ उठा कर जीवन को उत्तम बनायें। इसी अपेक्षा से-

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ७४

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा (क) - सभी आर्य और हिन्दू समुदाय सन्ध्या करता है। सुबह-शाम वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। एक शंका है। क्योंकि सभी सात्विक भोजन नहीं करते हैं। न खाने-पीने वाली चीजें भी खा-पी लेते हैं। हम तो वेद मन्त्रों को पवित्र समझते हैं। गलत उच्चारण को हत्या समझते हैं। तो क्या आमिषभोजी को सन्ध्या करना अच्छा है? उसे वही लाभ मिलेगा जो एक सात्विक आचरण करता है?

(ख) - हम हमेशा यज्ञों का आयोजन करते हैं। यज्ञ से पहले कम से कम आठ-दस दिन पवित्रता धारण करते हैं। खाने-पीने आदि कामों में यज्ञकर्त्ता अपने घर पास-पड़ौस के लोगों को भी बुलाता है। लोग आते हैं, श्रद्धा के साथ पण्डित जी यज्ञ करते हैं और अन्त में सभी से आग्रह करते हैं कि पूर्णाहुति तीन बार वे भी करें। हो सकता है सभी लोग तैयार होकर नहीं आये हों। जल्दी-जल्दी पुराने वस्त्र में भी आ गये हों। या एक दिन पहले कुछ न खाने वाली चीज खा लिये हों। अब सभी लोग बारी-बारी से आहूतियाँ देते हैं। ऐसी स्थिति में बिना तैयारी भी वह व्यक्ति आहुति देने चला जाता है। लोग क्या सोचेंगे? नहा-धोकर नहीं आया है। अपने को सही साबित करने के लिये ऐसा करना पड़ता है। कहाँ तक सभी से पूर्णाहुति करवाना सही है?

(ग) - मन्त्रों में अक्षरों के नीचे या ऊपर कुछ रेखाएँ होती हैं। क्या संकेत है जैसे-

ओं (शन्नों) देवीरभिष्टयऽआ(पों)

सही जानकारी की प्रतीक्षा में

- सोनाराम नेमधारी आर्यभूषण, कारोलिन, बेलडाट, मोरिशस

समाधान (क) - प्रथम तो आपने लिखा कि 'सभी आर्य और हिन्दू समुदाय सन्ध्या करता है।' इस पर हमारा कथन है कि ऐसा नहीं है कि सभी सन्ध्या करते हैं, हाँ आपका प्रश्न उनको लेकर है जो सन्ध्या करते हैं उनमें भी आमिषभोजी होते हुए सन्ध्या करते हैं।

मन्त्र के अशुद्ध उच्चारण करने पर दोष लगता है किन्तु हत्या जैसा दोष नहीं लगता एक तो सात्विक भोजन करते हुए मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण करना दूसरा आमिषभोजी होते हुए मन्त्र का शुद्ध उच्चारण करना ये दोनों अलग-अलग बाते हैं। प्रथम में अशुद्ध उच्चारण का दोष है, दूसरे में उच्चारण तो शुद्ध है किन्तु आमिषभोजन का दोष है। दोषी तो दोनों हैं। आप अशुद्ध उच्चारण को हत्या जैसा दोष मान रहे हैं, अन्य कोई मांस भक्षण को हत्या दोष मानता है। बड़ा दोषी कौन है सात्विक आहार-विहार से युक्त मन्त्रोच्चारण अशुद्ध करने वाला वा मांसादि भक्षण से युक्त शुद्ध मन्त्रोच्चारण करने वाला? इसका निर्णय पाठक स्वयं करें।

अब आपके मूल प्रश्न पर आते हैं कि क्या आमिषभोजी का सन्ध्या करना अच्छा है? इस पर हमारा उत्तर है कि न करने वाले से तो अच्छा है। हाँ, उसको इस सन्ध्या का वह फल तो नहीं मिलेगा जो फल सात्विक आहार-विहार करने वाले को मिलता है। सात्विक आहार-विहार करने वाला सन्ध्या से अधिक आनन्द शान्ति ज्ञान को प्राप्त कर उत्तरोत्तर उन्नति करेगा किन्तु आमिषभोजी को वह उपलब्धि नहीं होगी।

एक आमिषभोजी सन्ध्या नहीं करता और एक सन्ध्या करता है इन दोनों में निश्चित रूप से सन्ध्या करने वाला अच्छा है। इसके सुधार की अधिक सम्भावना है। हो सकता है वह सन्ध्या के महत्त्व को देखता हुआ कालान्तर में यह मांसादि खाना छोड़ देवे। इसलिए आमिषभोजी सन्ध्या करने वाले को पतित दृष्टि से न देखें।

(ख) - यज्ञकर्म में भाग लेने वालों को पवित्रता धारण करनी चाहिए। बाहर-भीतर से पवित्र होकर यज्ञकर्म करना चाहिए यह उत्तम स्थिति है। यज्ञकर्म स्नानकर, धुले हुए वस्त्र पहनकर करने का शास्त्रीय विधान है किन्तु यदि व्यक्ति किसी परिस्थिति के कारण बाह्य शुद्धि स्नान आदि नहीं कर पाया तो उस व्यक्ति को यज्ञकर्म नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसी परिस्थिति में भी यज्ञकर्म करना लाभदायक ही होगा और यदि उस व्यक्ति ने यज्ञ नहीं किया तो पाप लगेगा। ऋषि दयानन्द ने हमें परिस्थिति विशेष में विकल्प दिया है कि यदि जल की व्यवस्था न हो और आलस्य भी न हो तो वहाँ बिना स्नान भी यज्ञकर्म, सन्ध्या आदि किया जा सकता है। मात्र स्नान आदि के न करने से नित्यकर्म छोड़े नहीं जाते, छोड़ने नहीं चाहिए। क्योंकि शास्त्र कहता है-

वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके।

thearyasamaj.org

नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि।।
नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम्।
ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्यायवषट्कृतम्।।

– मनु. २.१०५-१०६

वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सन्ध्योपासनादि पंचमहायज्ञों के करने और होममन्त्रों में अनध्याय विषयक अनुरोध (आग्रह) नहीं है, क्योंकि नित्यकर्म में अनध्याय नहीं होता। जैसे श्वास-प्रश्वास सदा लिये जाते हैं छोड़े नहीं जाते हैं, बन्द नहीं किये जाते वैसे नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिए, न किसी दिन छोड़ना, क्योंकि अनध्याय में भी अग्निहोत्रादि उत्तम कर्म किया हुआ पुण्यरूप होता है। जैसे झूठ बोलने में सदा पाप और सत्य बोलने में सदा पुण्य होता है, वैसे बुरे कर्म करने में सदा अनध्याय और अच्छे कर्म करने में सदा स्वाध्याय ही होता है।

इसलिए परिस्थिति विशेष में स्नान आदि गौण कर्म छोड़ा जा सकता है किन्तु यज्ञादि मुख्य कर्म नहीं छोड़े जा सकते।

यज्ञ की पूर्णाहुति सभी देवें ऐसा कहीं विधान नहीं है। जो यजमान बना है पूर्णाहूति उसी के हाथों होती है। पूर्णाहूति के लिए सभी से आग्रह करना पुरोहित की मान्यता है। ऐसा कर पुरोहित सबको प्रसन्न करना चाहते हैं। आजकल लोगों की सुविधा व उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भी यज्ञ करते-करवाते हैं। जबकि पुरोहित का कर्त्तव्य है कि वह ऋषियों की शुद्ध परम्परा अनुसार यज्ञ करे-करवावे।

यज्ञ में जो विना स्नान के स्नान किया हुआ अपने को दिखाना चाहता है यह उस व्यक्ति की न्यूनता है, उसमें सत्य दिखाने का आत्मबल नहीं है। यदि होता तो वह अपनी यथार्थ स्थिति रख सकता है।

(ग) – मन्त्रों के ऊपर-नीचे जो रेखा (' –) दिखाई देती हैं वह स्वर चिह्न की रेखाएँ हैं। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ये तीन स्वर होते हैं। इन स्वरों का अर्थ पर प्रभाव पड़ता है। दो शब्द एक जैसे दिखते हुए यदि उनमें स्वर का भेद है तो अर्थ का भेद भी होगा। जैसे स कर्त्ता, स कर्त्ता इन दो वाक्यों में दो प्रकार के स्वर होने से दो ही प्रकार के अर्थ होते हैं। पहले का अर्थ है- वह अगले दिन करेगा और दूसरे वाक्य का अर्थ है वह करने वाला पुरुष है। यह अर्थभेद स्वर के कारण हुआ, इसमें और भी कारण है। जहाँ मन्त्र के अंश में कोई चिह्न नहीं दिखता वह उदात्त, जहाँ – ऐसी रेखा हो वह अनुदात्त और जहाँ ' ये रेखा हो वह स्वरित का चिह्न कहलाता है। यह सब स्वरों के चिह्न ही हैं। इस विषय में कभी फिर अवसर हुआ तो आगे लिखेंगे।

– ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० अक्टूबर २०१४ तक)

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्री मधुर बिश्नोई, जयपुर, राज. ३. श्री रामप्रकाश अग्रवाल, भीलवाड़ा, राज. ४. श्रीमती शिवकान्ता तापड़िया, कोटा, राज. ५. श्रीमती कुसुम बाला, जयपुर, राज. ६. श्री मनोहरदास आर्य, नागौर, राज. ७. श्रीमती सन्तोष चौहान, चण्डीगढ़ ८. श्री जेठमल कालूराम, ब्यावर, राज. ९. श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल, सहारनपुर, उ.प्र. १०. श्री राकेश कुमार, फरीदाबाद, हरि. ११. श्री सतीश निझावन, लखनऊ, उ.प्र. १२. श्री शेरसिंह आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. १३. श्री पुनीत मदान, फरीदाबाद, हरि. १४. श्री सोनेराव आचार्य, लन्दन, यू.के. १५. श्री सुरेन्द्र सिंह, नई दिल्ली १६. श्री अजय आर्य, बागपत १७. श्री ब्रह्मपाल, सहारनपुर, उ.प्र. १८. श्रीमती आशारानी आर्या, गाजियाबाद १९. श्रीमती मंजू त्यागी आर्या, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. २०. श्रीमती सुभद्रा आर्या, सहारनपुर २१. श्री शाह नारायण हंसराज अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. २२. श्री वेदमुनि वानप्रस्थी, भरतपुर, राज. २३. श्री सतगुरु सुखराम महाराज, अजमेर २४. श्री हेमन्त कुमार शर्मा, भरतपुर, राज. २५. श्री नितेश शर्मा, शिवगंज, राज. २६. श्री सुबोध कुमार आर्य, बिहार २७. श्री राकेश जुरेशा, दिल्ली २८. श्री लक्ष्मीधर नायक, यमुनानगर २९. श्री डॉ. रामप्रकाश वशिष्ठ, अलीगढ़ ३०. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. ३१. श्री विश्वास पारीक, अजमेर ३२. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ३३. श्रीमती दिप्ती देशपाण्डे, जबलपुर, म.प्र. ३४. श्रीमती दीपिका विरेन्द्र बन्देवार, छिन्दवाड़ा, म.प्र. ३५. श्री डॉ. अर्जुनदेव तनेजा, नई दिल्ली ३६. श्री हरिसिंह, गुड़गाँव, हरि. ३७. श्री हेमाराम आर्य, नागौर, राज. ३८. श्रीमती कलावती देवी कुर्मी, जयपुर, राज. ३९. श्रीमती नर्वदा देवी कालानी, पाली, राज. ४०. श्रीमती पुष्पादेवी झँवर, ब्यावर, राज. ४१. श्री आदित्य स्वामी, बीकानेर, राज. ४२. श्री अमरसिंह विजयलक्ष्मी आर्य, करनाल, हरि. ४३. आर्यश्री अरविन्द कुमार राठी ४४. सुश्री धरती झँवर, ब्यावर, राज. ४५. श्री कन्हैयालाल आर्य, शाहपुरा, राज. ४६. श्रीमती अन्नपूर्णा देवी भारद्वाज, शाहपुरा, राज.।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० अक्टूबर २०१४ तक)

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्री रमाशंकर गुप्ता, अजमेर. ३. श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल, सिंगापुर ४. श्री अविनाश चन्द्र बब्बर, नई दिल्ली ५. श्रीमती ऋचा यादव, जयपुर, राज. ६. श्री हरपालसिंह, सहारनपुर, उ.प्र. ७. श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. ८. श्री अमन प्रकाश, कोटा, राज. ९. श्री विनोद कुमार शर्मा, फरीदाबाद, हरि. १०. श्री कौशल गुप्ता, गाजियाबाद ११. श्री वेदप्रकाश आर्य, जयपुर, राज. १२. श्री तुलसीरामसिंह, हैदराबाद १३. श्री नितिन ओझा, अजमेर १४. श्री मोहनलाल, शाहपुरा, राज. १५. श्री कपिल वर्मा, सोजतसिटी, राज. १६. श्री बलवीरसिंह बत्रा, अजमेर १७. श्री कैलाशचन्द्र शर्मा, अजमेर १८. श्री डॉ. रामप्रसाद वशिष्ठ, अलीगढ़ १९. श्रीमती भँवरी देवी सोमाणी, अजमेर २०. श्री विश्वास पारीक, अजमेर २१. श्री पूरणसिंह वेदी, अजमेर २२. श्रीमती दिप्ती देशपाण्डे, जबलपुर, म.प्र. २३. श्रीमती कंचनदेवी वर्मा, विजयनगर, राज. २४. श्री डॉ. रमेशमुनि, अजमेर २५. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २६. श्री अनिश राजपूताना म्यूजिक हाऊस, अजमेर २७. श्रीमती सोराम देवी राजपुरोहित, चैन्नई २८. श्री भँवरलाल राजपुरोहित, चैन्नई २९. श्री नकुल पलक, अजमेर ३०. श्री डॉ. अर्जुनदेव तनेजा, नई दिल्ली ३१. श्री राजेश अग्रवाल, अजमेर ३२. श्री मधुरम आर्य, अजमेर ३३. श्री प्रेमशंकर, बून्दी, राज. ३४. श्रीमती सुनिता वर्मा, अजमेर ३५. श्री रमेश कुमार अरोड़ा, दिल्ली ३६. श्री ओरथोदम एण्ड फ्लोरिकल्चर, तिलोरा, राज. ३७. श्री दुर्गाशंकर, अजमेर ३८. श्री हंसमुनि योगार्थी, नारनौल, हरि. ३९. श्री रामपत आर्य, महेन्द्रगढ़, हरि. ४०. श्री जे.पी. शर्मा, अजमेर ४१. श्री सत्यवीरसिंह मलिक, सोनीपत, हरि. ४२. श्रीमती कलावती देवी कुर्मी, जयपुर, राज. ४३. श्री विपिन कीर्ति लखोटिया, बैंगलूर, कर्ना. ४४. श्रीमती नर्वदा देवी कालाणी, पाली, राज. ४५. श्री शैलेश अवस्थी, जयपुर ४६. श्री महावीर सिंह चौधरी, जयपुर ४७. श्री रोशनलाल गर्ग, जयपुर ४८. श्री शिवनाथ वर्मा, जयपुर ४९. श्री पी.एल. अग्रवाल, जयपुर ५०. श्री रामकुमार अग्रवाल, जयपुर ५१. श्री नानकराम लालवानी, जयपुर ५२. श्री सत्येन्द्र [illegible]ड़वाल, जयपुर ५३. श्री मनोज कुमार गुप्ता, जयपुर ५४. श्री विष्णु गुप्ता, जयपुर ५५. श्री हर्षनाथ तिवाड़ी, जयपुर ५६. श्री रा[illegible] प्रसाद शर्मा, जयपुर ५७. श्री सुरेन्द्रसिंह, जयपुर ५८. श्री निशान्त, जयपुर ५९. श्री राकेश लोहिया, जयपुर ६०. श्री सुबोध जय[illegible] ६१. श्री [illegible]रामकिशोर, जयपुर ६२. श्री राजेन्द्र शर्मा, जयपुर ६३. श्री जयदेव शर्मा, जयपुर ६४. श्री जितेन्द्र गर्ग, जयपुर ६५. श्री कालराम, जयपुर, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

सांख्ययोग व भक्तियोग

- आचार्य प्रद्युम्न

'सांख्य के अनुसार जीव क्या है' यदि इस प्रश्न की छानबीन की जाये तो प्रकाशक और प्रकाश्य, विज्ञाता और विज्ञेय, द्रष्टा और दृश्य, भोक्ता और भोग्य, स्वामी और स्व, चिन्मय स्वरूप चेतन और बुद्धि का सम्मिश्रित रूप ही जीव है। जीव इन उपर्युक्त दोनों रूपों के ऐसा समुच्चय है कि जैसे सर्वथा पृथक् दो चीजें मिलकर एक हो गई हों। पानी में नमक जैसे घुल जाये और अब वे दोनों एक ही प्रतीत होने लगें, इसी प्रकार प्रकाशक चेतन और प्रकाश्य बुद्धि एक रूप में ही अनुभव होने लगते हैं। सांख्य मार्ग की साधना के अनुसार साधक को जो कुछ करना होता है वह यही है कि इन सम्मिलित दोनों रूपों में से प्रकाशक, विज्ञाता, द्रष्टा, भोक्ता, स्वामी या चेतन रूप को प्रकाश्य, विज्ञेय, दृश्य, भोग्य, स्व या जड़ से अलग कर देना। साधना की यह क्रिया कुछ ऐसी ही है जैसे कि कोई वैज्ञानिक उपायों का आलम्बन लेकर उसे मिले हुए नमक व पानी को अलग कर डाले। यही मुक्ति है, मोक्ष है, यही ईश्वर प्राप्ति है, यही आत्मसाक्षात्कार है, यही कैवल्य है, यही पर वैराग्य का फल (स्वरूप में स्थिति) है, यही ब्रह्म प्राप्ति है, यही श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार '**मम साधर्म्यम्**' '**मामेवैष्यसि**' '**निवसिष्यसि मय्येव**' **ब्रह्मभूयाय कल्पते** '**ब्राह्मी स्थिति**' '**ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति**' 'पुरुषोत्तम में स्थिति' है।

इस उपर्युक्त स्थिति को पाने का एक उपाय तो '**तत्त्वाऽभ्यासात् नेति-नेति त्यागात्**' (सा. ३.७५) साँख्य में उपवर्णित हुआ है तो दूसरा उपाय भी है जिसे योगसूत्रों में जगह-जगह 'ईश्वर-प्रणिधान' नाम से कहा गया है। '**कस्मै देवाय हविषा विधेम**' इत्यादि शतशः सहस्रशः वेदमन्त्रों के द्वारा स्तुति, प्रार्थना व उपासना के रूप में तथा श्रीमद्भगवद्गीता में अव्यभिचारी भक्तियोग या समर्पण योग या अनन्य शरणागति के रूप में एक पूर्णसाधन स्वीकारते हुए जिसका महिमागान किया गया है। इस पथ से चलने वाले साधकों को सांख्यमार्ग (ज्ञानमार्ग) के पथिकों की तरह प्रारम्भ से ही जड़ से चेतन को अलग करके देखने, खोजने-परखने या अन्वेषण करने की बात नहीं कही जाती, बल्कि यह कहा जाता है कि आज जिस दिन तुम साधना के पथ चलने का संकल्प कर रहे हो, जो कुछ भी जिस रूप में भी हो, अपने आप को पूर्णरूप से उस ईश्वर को दे डालो जिसके बारे में आचार्योपदेश तथा शास्त्र से सुना है अपना शरीर, अपना मन, अपना प्राण, अपने पास जो कुछ रखते हो छोटी क्रियाएँ या एक शब्द में कहें तो 'अपना मैं व मेरा' सब कुछ उसे दे डालो। उसे न तो तुम्हारी आवश्यकता है, न तुम्हारे पदार्थ की, न तुम्हारे उपहारों की, न तुम्हारे कर्मों की, न किसी विचार या भाव की। वह तो सर्वथापूर्ण है, अकाम है, आनन्दमय है, किन्तु तुम्हें उसकी आवश्यकता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं है। उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करने का तुम्हारे पास एक ही उपाय है-समर्पण! समर्पण! समर्पण! इस समर्पण से तुम्हारे अन्दर स्वतः ही शुद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। तुम्हारे कर्म शुद्ध होने लगते हैं, प्रकृति के आकर्षण ढ़ीले पड़ने लगते हैं, विकार धीरे-धीरे स्वतः ही शान्त होने लगते हैं, आन्तरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त होने लगती है, शरीर से तादात्म्य टूटने लगता है, धर्म तुम्हारा स्वभाव बनने लगता है किसी भी वस्तु, व्यक्ति पर अधिकार भाव समाप्त होने लगता है। यह समर्पण दिनानुदिन बढ़ता हुआ जब अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है तो मानो तुम साधना करने वाले नहीं रहते बल्कि तुम्हारे अन्दर **वही** साधक बनकर साधना करने लगता है। उस स्थिति में तुम स्वतः ही सिद्धावस्था को प्राप्त हो जाते हो।

सांख्यमार्ग (ज्ञानमार्ग) से चलने वाला साधक जैसे अपने आपको गुणों व गुणों की क्रियाओं और उनके विकारों से अलग करके चिन्मय स्वरूप में अवस्थित हो जाता है, पूर्णरूप से जड़ता से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न कर लेता है, उसी प्रकार इस भक्तियोग से चलने वाला साधक भी समर्पण की पूर्णता में अपने अन्तर्यामी चिन्मय स्वरूप भगवान् को उपलब्ध कर लेता है।

ये दोनों ही मार्ग प्रकृतिभेद से साधकों को इष्ट फल देने वाले हैं। दोनों ही मार्गों का गन्तव्य एक ही है। भगवद्गीता में कहा है-

लोकेऽस्मिन् द्विधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।

(गी.३.३)

अर्थात् हे निष्पाप अर्जुन! पहले (दूसरे अध्याय में) ही यह कह चुका हूँ कि इस संसार में दो प्रकार की निष्ठाएँ हैं। ज्ञानयोग सांख्यों की और कर्मयोग योगियों की और भी-

thearyasamaj.org

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यग् उभयोर्विन्दते फलम्।।
(अ. ५.४)

यत् साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।
(अ.५.५)

जो स्थान (पद=लक्ष्य) सांख्यमार्ग वाले ज्ञानयोगियों द्वारा प्राप्त किया जाता है वही स्थान भक्तिप्रधान कर्मयोगियों द्वारा भी प्राप्त कर लिया जाता है। अतः सांख्य एवं योग (भक्तियोग) दोनों को जो एक रूप में देखता है, वही ठीक-ठीक देखता है।

मार्ग तो दो ही हैं, अन्य सब राजयोग, ध्यानयोग, बुद्धियोग, समत्वयोग इन्हीं उपर्युक्त दो मार्गों के सहायक हैं। राजयोग या ध्यानयोग के द्वारा अपनी बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्तर्मुख किया जाता है। बुद्धि योग एक प्रकार का विचार योग है, जिसके बल से हम आचार्योपदेश व शास्त्र द्वारा उद्घाटित तथ्य को समझ पाते हैं। व्यवहार में अनुकूलता प्रतिकूलता के उपस्थित होने पर संयम साधने के लिए मन को स्थिर रखने का नाम समत्वयोग है। पूछा जा सकता है कि क्या कर्मयोग एक स्वतन्त्र मार्ग नहीं है? साधकों द्वारा मार्गों का विभाजन दर्शाते समय यद्यपि 'कर्मयोग' इस शब्द का भी प्रयोग तो किया जाता है किन्तु यह कोई स्वतन्त्र मार्ग नहीं है। वैसे कर्म तो मनुष्य मात्र को करने होते हैं चाहे कोई ज्ञानी है या अज्ञानी, रागी है या विरागी, गृहस्थ है या संन्यस्त, ब्रह्मचारी है या वनस्थ, स्वामी है या सेवक, ब्राह्मण है या क्षत्रिय, वैश्य है या श्रमिक। मनुष्य ही नहीं सम्पूर्ण जड़-चेतन सृष्टि कर्म-निरत दिखाई देती है। अतः कर्म का तो त्याग हो ही नहीं सकता। विचार्य यह है कि कर्म किस भाव के साथ किये जा रहे हैं। कर्म सकाम होकर भी किये जाते हैं और निष्काम होकर भी । कर्म जब संसार के भोगों (सत्ता, सम्पत्ति, सम्मान, वैषयिक-सुख) को लक्ष्य कर किये जाते हैं, परमेश्वर के विधान का अतिक्रमण करके नहीं बल्कि उसके विधान के अनुसार अर्थात् धर्मानुसार जब उन कर्मों को किया जाता है तो वे 'सकाम कर्म' के श्रेणी में आते हैं। धर्म का अतिक्रमण करके किये गये कर्मों को तो सकाम कर्म भी क्या कहें फिर तो वे 'निषिद्ध कर्म' इस नाम से अभिहित होते हैं। किन्तु जब सब दुःखों से छूट के केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिये धर्म से युक्त सब कर्मों को किया जाता है तो यह 'निष्काम कर्म मार्ग' बन जाता है। ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के वेद विषय विचार में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी कहा है-

'स (कर्मयोगः) सदा परमेश्वरस्य प्राप्तिमेव फलमुद्दिश्य क्रियते तदाऽयं श्रेष्ठफलापन्नो निष्काम संज्ञां लभते'।

वही पर एक दूसरी जगह लिखते हैं-

उपासनाज्ञानकाण्डयोः कर्मकाण्डस्य निष्काम-भागेऽपि च परमेश्वर एवेष्टदेवोऽस्ति। कस्मात्?तत्र तस्यैव प्राप्तिः प्रार्थ्यते।

सार यह है जब साधक फलाशा से रहित होकर कर्म करता है तो इससे उसका रजोगुण क्षीण होने लगता है और इसके परिणामस्वरूप साधक का मन अकाम होकर भगवान् में स्थित हो जाता है। कर्म करने की इस प्रक्रिया में समस्त यज्ञों के अधीश्वर परम प्रभु के लिये ही अपने सभी कर्मों को आहुति के रूप में अर्पित करना होता है। इस प्रकार अन्तः कर्मयोग भक्तियोग का ही रूप धारण कर लेता है।

जैसा कि ऊपर कहा-कर्म तो ज्ञानयोगी (सांख्य मार्गी) को भी करने होते हैं किन्तु भाव में अन्तर होता है। ज्ञानयोगी तटस्थ रहता हुआ कर्मों को अलिप्त भाव से करता है।

'गुणाः गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते'
(३.२८)

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः।
(४.२०)

नैव किञ्चत् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
(५.८)

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वाऽऽत्मशुद्धये।।
(५.११)

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन् न कारयन्।।
५.१३।।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के उपर्युक्त वचन ज्ञानयोगी के आधारस्तम्भ होते हैं। ज्ञानयोगी का सारा जोर कर्मों के कर्तृत्व का नाश करने में होता है। वह ऐसी युक्ति से कर्म करता है कि कर्म करते हुए भी कुछ नहीं कर रहा होता। उसकी साधना का सम्पूर्णसार अकर्ता भाव में छिपा होता है। जबकि भक्तिमार्गी कर्मों के कर्तृत्व का नाश नहीं करता बल्कि कर्मों को भगवान् के लिये समर्पित करता है।

-वैदिक गुरुकुलम्, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३१ अक्टूबर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन - जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से एक है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। दोनों समय प्रवचन/स्वाध्याय की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि आदि सृष्टि से ५००० साल पहले तक वैदिक समाज वेद के अनुसार अपना व्यवहार चलाता था लेकिन मध्यकाल की राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों के कारण हम वेदों से दूर होते गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थप्रकाश में संकेत करते हैं कि महाभारत के १००० साल पहले से इस आर्यावर्त का पतन प्रारम्भ हो चुका था। जब व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र अत्यन्त समृद्ध हो जाता है, तो उसमें आलस्य प्रमाद आदि भी बढ़ने लगते हैं जिससे उसके पतन की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती हैं और यही हम आर्यों के साथ हुआ। चाणक्य के अनुसार निरन्तर प्रगतिशील रहने के लिए तपपूर्वक जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। स्वयं चाणक्य का जीवन इसका उदाहरण है। विशाखदत्त मुद्राराक्षस के तृतीय अंक के १५वें पद्य में महाराजा चन्द्रगुप्त के प्रधानामात्य चाणक्य के घर का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि-

उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानां,
बटुभिरुपहृतानां वर्हिषां स्तूपमेतत्।।
शरणमपि समिद्भि: शुष्यमाणाभिराभि-
विनमितपटलान्तं दृश्यतं जीर्णकुड्यम्।।

अर्थात् एक ओर उपलों को तोड़ने वाला पत्थर का टुकड़ा पड़ा हुआ है, तो दूसरी ओर शिष्यों द्वारा लाए हुए कुशाओं का यह ढ़ेर है। धूप में सूखती हुई समिधाओं के भार से, ढ़के हुए छत के किनारे वाला, जीर्ण दिवारों वाला यह घर अमात्य चाणक्य का घर है। अस्तु तो तपश्चर्या पूर्वक जीवन बिताना हमें सतत आगे बढ़ने की, धर्म में स्थिर रहने की प्रेरणा देता है। हमारे पतन का दूसरा प्रमुख कारण यह है कि राजसत्ता अयोग्यों के हाथ में आ गई। जब बच्चा बीमार हो जाता है तो उसे माता-पिता का विशेष स्नेह मिलने लगता है, ऐसे ही कुछ उदाहरण हमें इतिहास में भी मिलते हैं जब कुछ राजाओं ने अपनी अयोग्य सन्तानों के प्रति कृपा दृष्टि रखते हुए उन्हें राजा बनवाया। उनकी गलत बातों को भी प्रश्रय दिया। जब अयोग्यों को शासक बनाया जाता है तो इससे योग्यों के राजा बनने का मार्ग बन्द हो जाता है और वह अयोग्य शासक, योग्य सलाहाकार मन्त्रियों को अपने आस-पास आने नहीं देता और यही आर्यावर्त्त के पतन का कारण बना।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में वैदिक वर्ण व्यवस्था में योग्यतानुसार व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत किया। जैसा कि विदित है आज के समाज में जो जन्मानुसारी वर्णव्यवस्था प्रचलित है, इसके स्थान में वैदिक समाज में कर्मानुसारी वर्णव्यवस्था हुआ करती थी, जिसमें सर्वाधिक योग्य होने के कारण ब्राह्मण वर्ण को श्रेष्ठ व प्राप्य माना जाता था। वैदिक ब्राह्मण की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए आपने वशिष्ठ-विश्वामित्र का दृष्टान्त सुनाया। एक बार राजा विश्वामित्र अपने दल-बल के साथ महर्षि वशिष्ठ से मिलने पहुँचे। आश्रमोचित मर्यादा का ध्यान रखकर अपनी सेना, अस्त्र-शस्त्र-आभूषण को आश्रम के बाहर उतार कर उन्होंने आश्रम में प्रवेश किया। भेंट के बाद जब विश्वामित्र वापस आने लगे तो महर्षि वशिष्ठ ने उन्हें भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया। राजा विश्वामित्र ने कहा कि मेरे साथ मेरी सेना भी है, बिना सेना के भोजन की व्यवस्था किए मैं भोजन नहीं कर पाऊँगा। महर्षि ने कहा कि ठीक आपकी सेना के लिए भी भोजन व्यवस्था हो जाएगी। राजा ने कहा- महर्षि मेरे साथ हजारों सैनिक हैं, आप इन सबके भोजन की व्यवस्था कैसे कर पाएँगे। महर्षि ने कहा- मुझे आपकी सेना के बारे में पता है राजन्। हम सबके लिए भोजन की व्यवस्था कर देंगे। पुन: महर्षि ने सबके लिए खीर बनवाई और सभी को तृप्ति पर्यन्त खिलाई। राजा विश्वामित्र ने महर्षि से पूछा कि- महर्षि इतनी सारी खीर बनाने के लिए आप दूध कहाँ से लाएँ। महर्षि ने कहा- राजन् इतना दूध तो हमारी गोशाला में ही हो जाता है। विश्वामित्र ने कहा- तब तो महर्षि मैं आपकी गोशाला देखना चाहूँगा। महर्षि वशिष्ठ की गोशाला की दुधारू गायों को देखकर विश्वामित्र का जी ललचा गया। उन्होंने महर्षि से कहा- महर्षि मुझे इनमें से कुछ गायें अपनी गौशाला के

thearyasamaj.org

लिए चाहिए। महर्षि वशिष्ठ ने विनम्रता पूर्वक मना किया कि ये आश्रम की गाय हैं, अत: मैं आपको नहीं दे सकता। विश्वामित्र ने कहा कि- महर्षि यह निवेदन नहीं, राजा का एक आदेश है, या तो हमें गाय दे दो नहीं तो हमसे युद्ध करो। महर्षि ने कहा- राजा आश्रम की गायों को हम ऐसे नहीं दे सकते और अगर आप युद्ध ही चाहते हैं तो हम भी उसके लिए तैयार हैं। पुन: विश्वामित्र की भारी-भरकम सेना और महर्षि वशिष्ठ के मध्य युद्ध हुआ। शास्त्र का अभ्यास करने वाले वशिष्ठ ने शस्त्र का अभ्यास करने वाले विश्वामित्र को उसके पूरे दल-बल के साथ हरा दिया। इस हार ने विश्वामित्र को झंकझोर दिया। क्षत्रिय वर्ण के दम्भ में अपने को अजेय मानने का उनका अभिमान चला गया। इस प्रकार आचार्य जी ने बताया कि वैदिक वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण वर्ण इसलिए सर्वोच्च होता है क्योंकि उसमें वे सारी योग्यताएँ होती हैं जो निम्न वर्णों में होती हैं। ब्राह्मण अन्य कर्मों की गौणता को ध्यान में रखकर केवल शास्त्राभ्यास में लगा रहता है।

२. महर्षि निर्वाण दिवस- प्रतिवर्ष की परम्परानुसार इस वर्ष भी महर्षि स्वामी दयानन्द जी के निर्वाण के अवसर पर (कार्तिक अमावस्या, दीपावली के दिन तदनुसार २४ अक्टूबर २०१४ को) ऋषि उद्यान परिसर में विशेष हवन किया गया। यज्ञोपरान्त महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए प्रात: उद्बोधन में महर्षि के हम पर जो उपकार हैं, उनकी विस्तार से चर्चा की गई। पुन: सायं काल सभी ब्रह्मचारी अजमेर में ही जयपुर रोड स्थित महर्षि की निर्वाण स्थली 'भिनाय कोठी' गए, जहाँ महर्षि ने शरीर त्यागा था। भिनाय-कोठी के निर्वाण कक्ष में सभी ने सामूहिक सन्ध्या की तत्पश्चात् नवीन ब्रह्मचारियों के महर्षि के निर्वाण से सम्बन्धित प्रश्नों का समाधान किया गया।

३. ऋषि मेला - महर्षि जी के निर्वाण के अवसर पर प्रतिवर्ष परोपकारिणी सभा की ओर से अजयमेरू नगर स्थित ऋषि की वाटिका '**ऋषि उद्यान**' में 'ऋषि मेला' आयोजित किया जाता रहा है। तदनुसार इस वर्ष भी निर्वाण के १३१ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ३१ अक्टूबर, १ व २ नवम्बर को 'ऋषि मेला-२०१४' आयोजित किया गया। इस अवसर पर देशभर से लगभग ३५०० ऋषिभक्त पधारें, जिन्होंने मेले के विभिन्न समसामयिक सत्रों, वेद-गोष्ठी व यज्ञीय प्रवचनों में अनेकों विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी (प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा) आचार्या सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा, डॉ. वेदपाल जी-बागपत, श्री सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. वागीश जी-मुम्बई आदि विद्वान् पधारें तथा आर्यजनता को पं. सत्यपाल पथिक, श्री भूपेन्द्रसिंह, पं. नौबतराम जी, ब्र. रामदयाल जी के सुमधुर भजनों के रसास्वादन का अवसर भी प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सत्रों में उद्घाटन सत्र, दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा, महर्षि दयानन्द-एक राष्ट्र पुरुष, आतंकवाद व भ्रष्टाचार का कारण, वर्तमान में आर्यसमाज की कार्यप्रणाली, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल-स्नातक सत्र, आर्य युवक सम्मेलन आदि प्रमुख रहें।

परम्परानुसार इस अवसर पर किसी वेद का आंशिक परायण किया जाता है, इसी क्रम में इस वर्ष ऋग्वेद के शेष मन्त्रों से आहुति प्रदान की गई। यज्ञ २७ अक्टूबर को प्रात: काल प्रारम्भ हुआ तथा पूर्णाहुति का कार्यक्रम २ नवम्बर को डॉ. वागीश जी मुम्बई के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। आर्यजनता ने आचार्य सत्यजित् जी आदि विद्वानों के यज्ञोपरान्त प्रवचनों से लाभ भी उठाया।

वेद-गोष्ठी- प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस वेद-गोष्ठी में 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' विषय पर देशभर से पधारे अनेक विद्वानों ने अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत किए।

गोष्ठी दो दिन तक चली जिसमें चार सत्रों में १२ पत्रों का वाचन हुआ। गोष्ठी का संयोजन व संचालन ज्ञानेन्द्र आर्य (ऋषि उद्यान) द्वारा किया गया।

३१/१०/२०१४ को प्रात: काल ईश्वरस्तुति प्रार्थना के वेदमन्त्रों से उद्घाटन सत्र के साथ गोष्ठी का प्रारम्भ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षा माननीया आचार्या सूर्या देवी जी (शिवगंज) रही मध्याह्नोत्तर द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरुक्षेत्र) ने की। १/११/२०१४ को प्रात:कालीन सत्र की अध्यक्षता माननीय डॉ. वेदपाल (मेरठ) ने की। मध्याह्नोतर कालीन सत्र की अध्यक्षता ब्र. ज्ञानेन्द्र आर्य दर्शनाचार्य (अजमेर) तथा संचालन ब्र. राजेन्द्र आर्य (सोनभद्र) ने की।

वेद प्रतियोगिता- वेद विद्या की रक्षा व उन्नति के लिए परोपकारिणी सभा कृत-संकल्प है। अत: ऋषि मेले पर 'चतुर्वेद-कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता' का आयोजन किया जाता है। जिसमें २१ वर्ष तक की अवस्था वाले वेदपाठी छात्र भाग ले सकते हैं, जिन्होंने कम से कम एक वेद

thearyasamaj.org

कण्ठस्थ किया हो। इस बार २१ विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

वेदपाठियों की परीक्षा आचार्य वेदव्रत जी गुरुकुल मारकण्डा, आचार्य उदयन जी-हैदराबाद, आचार्या शीतल जी-गुरुकुल आलियाबाद ने ली, वेद प्रतियोगिता के दानदाता **श्रीमान् सुधीर जी आनन्द (अमेरिका)** भी उपस्थित थे। इस परीक्षा में शुक्ल यजुर्वेद में प्रथम स्थान ९६ प्रतिशत अंकों के साथ श्री मनोज तिवाड़ी ने द्वितीय स्थान ६८ प्रतिशत, इन्द्रदेव पाण्डेय ने तृतीय स्थान ५६ प्रतिशत अंकों के साथ, विश्रुति आर्या गुरुकुल चोटीपुरा ने प्राप्त किया।

सामवेद में प्रथम स्थान ६६ प्रतिशत अंकों के साथ, विश्वाची आर्य ने द्वितीय स्थान ५५ प्रतिशत अंकों के साथ, दीपशिखा आर्या ने प्राप्त किया ये दोनों प्रतिभागी गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियाँ हैं। तृतीय स्थान निर्धारित प्रतिशत संख्या के अनुसार नहीं हो पाया।

अथर्ववेद और ऋग्वेद में एक-एक प्रतिभागी रहे लेकिन वे उत्तीर्ण स्थान प्राप्त नहीं कर पाए। पाँच अन्य प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया। इसमें प्रथम पुरस्कार की राशि १८०००/- रु., द्वितीय पुरस्कार १२०००/- रु. एवं तृतीय ८०००/- रु. की राशि दी गई। इसके साथ ही सब प्रतिभागियों को मार्ग व्यय एवं दयानन्द ग्रन्थमाला का एक-एक सैट भी दिया गया, सभी निर्णायकों को पाँच-पाँच हजार रुपये दक्षिणा प्रदान की गई। इस वेदपाठ प्रतियोगिता के संयोजक ब्र. कर्मवीर मेधार्थी दर्शनाचार्य रहे।

परोपकारिणी सभा का प्रयास है कि हमारे वैदिक-विद्वानों, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं में उत्तरोतर उत्साह बढ़ता ही जाए, अतः सभा प्रतिवर्ष विशिष्ठ वैदिक-विद्वानों, विदुषियों व कार्यकर्त्ताओं को 'ऋषि-मेले' के अवसर पर विभिन्न सम्मानों से सम्मानित करती आई है। वर्ष २०१४ में अग्रलिखित व्यक्तियों को यह सम्मान प्रदान किया गया:-

(क) डॉ. मुमुक्षु आर्य आर्ष पुरस्कार - (११०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - आचार्य उदयन, तेलंगाना

(ख) डॉ. रघुवीर सिंह सुधारक -वेदोपाध्याय पुरस्कार - (११०००/-रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - आचार्य वेदव्रत, मारकण्डा, कुरुक्षेत्र

(ग) डॉ. प्रियव्रतदास द-वेदाङ्ग पुरस्कार- (२१०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - डॉ. धर्मवीर, अजमेर

(घ) दीपचन्द आर्य धर्मार्थ न्यास पुरस्कार- (२१०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - आचार्य आनन्दप्रकाश, तेलंगाना

(ङ) स्वामी आशुतोष आर्ष अध्यापक पुरस्कार - (११०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - आचार्या शीतल, तेलंगाना

(च) विश्वकीर्ति आर्य युवा कार्यकर्ता पुरस्कार- (११०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - श्री लक्ष्मण जिज्ञासु, भरतपुर

(छ) श्री बिरदीचन्द आर्ष ईनाणी छात्रवृत्ति- (२१०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - ब्र. रविशंकर (महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर)

(ज) श्रीमती सुगनी देवी आर्ष ईनाणी छात्रावृत्ति- (२१०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - ब्र. कश्यप व्याकरणचार्य (महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर)

(झ) श्री ब्रह्मदत्त शर्मा एवं श्रीमती शकुन्तला देवी आर्ष छात्रवृत्ति - (२२०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - ब्र. सुरेन्द्र (महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर)

(ञ) स्व. श्री कन्हैयालाल जी लोहिया, कडैल छात्रवृत्ति पुरस्कार - (६००००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - ब्र. वेदनिष्ठ व्याकरणाचार्य (महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर)

(ट) स्वामी देवेन्द्रानन्द वैदिक धर्म प्रचारक पुरस्कार- (५१००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - ब्र. कर्मवीर दर्शनाचार्य

(ठ) इन्द्रजित् देव आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार- (११०००/- रुपये, प्रशस्ति पत्रादि) - महेन्द्रसिंह आर्य, करनाल, हरियाणा

सम्पूर्ण ऋषि मेले के कार्यक्रमों का यूस्ट्रीम (ustream) वेबसाइट पर लाइव प्रसारण भी चलता रहा। ऋषि भक्त इन वीड़ियों के देखने के लिए वेबसाइट के पेज पर जाकर ptlekharam खोज (सर्च) कर सकते हैं। इस तत्कालीन प्रसारण के लिए पं. लेखराम मिशन की सारी टीम विशेषकर लक्ष्मण जी जिज्ञासु, गौरव जी आर्य-जोधपुर, महेश जी सोनी, रजनीश बंसल, राहुल जी-अकोला विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। इसके साथ-साथ सभा उन सभी ऋषि भक्तों-कार्यकर्त्ताओं का भी धन्यवाद करती है जिनके सहयोग से यह ऋषि मेला अपनी पूर्ण भव्यता के साथ सम्पन्न हो सका। इति।।

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. आईए गुंजोटी, महाराष्ट्र- यह धरती है बलिदान की। गुंजोटी, ता. उमरगा, जिला धाराशिव, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र में दिनांक २४ से २६ नवम्बर २०१४ को परोपकारिणी सभा, अजमेर और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली बैजनाथ, महा. के तत्त्वावधान में प्रथम बलिदानी वेद प्रकाश के जन्म स्थान में गुंजोटी में यह कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। आप सभी आर्य प्रेमी, श्रद्धावान सादर आमन्त्रित हैं। प्रमुख उपस्थिति- डॉ. धर्मवीर जी, प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु आदि। विनति- प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि, मन्त्री माधव के. देशपाण्डे

२. ऋषि बोधोत्सव- प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव १६ से १८ फरवरी २०१५ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता ३० दिसम्बर २०१४ तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा।

३. वेद प्रचार- केरल में मलयालम भाषा में यजुर्वेद महर्षि स्वामी दयानन्द भाष्य का दो भागों में प्रकाशन होकर उसका विमोचन कालटी गाँव के सभागार में सम्पन्न हुआ। प्रकाशन वेद विद्या प्रतिष्ठान ने किया। पण्डित परमेश्वरम् नम्बूदरी ने चार वेदों का भाष्य परलोक गमन से पूर्व किया। लोकार्पण के अवसर पर स्वामी दयानन्द पुरस्कार से विद्वान् शोधकर्त्ता पं. राजेन्द्र जिज्ञासु को ५५५५५/- रु. की राशि, शाल व ताम्र पत्र के साथ भेंट दी गई।

मुख्य अतिथि आई.एस.आर.ओ. (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष डा. माधवन नय्यर थे। होशंगाबाद के गुरुकुल के कुलपति ऋतस्पति की उपस्थिति में एक महिला ने एक महिला को वेद देकर स्वामी दयानन्द के स्वप्नों को साकार किया। कोचीन की राज माता रानी गौरी लक्ष्मीबाई ने वेद के अन्वेषण पर बल दिया। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु ने कहा कि अत्यन्त गर्व है कि जगतगुरु शंकराचार्य ने महिला को वेद पढ़ने से रोक लगाई उन्हीं की जन्म स्थली पर वेद की प्रथम प्रति एक महिला द्वारा दलित महिला को भेंट कर नया इतिहास रचा। सभी अतिथियों का सम्मान किया। यह प्रस्तुति डॉ. आशोक आर्य द्वारा की गयी।

४. समारोह सम्पन्न- २७ अक्टूबर २०१४ को वैदिक वीरांगना दल के द्वारा गौ रक्षा सम्मेलन व दीपावली मिलन समारोह मालवीय नगर स्थित संस्था के कार्यालय बी-१२३, जयपुर, राज. में आयोजित किया गया। सम्मेलन में वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्षा कुमारी अनामिका शर्मा ने गौ दुग्ध व गाय के दूध से बने पदार्थों की गुणवत्ता का वैज्ञानिक महत्त्व बताया। उन्होंने बताया कि भारत के आर्थिक विकास में गौ पालन का बहुत महत्त्व है।

गौ रक्षा सम्मेलन की मुख्य वक्ता श्रीमती दुर्गा शर्मा रही। इस अवसर पर भूतपूर्व ब्यूरोक्रेट श्री गोस्वामी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती रमा बजाज ने की। सम्मेलन के दौरान देश में गायों की दशा पर एक प्रजेन्टेशन प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन में शहर के सभी वार्डों की प्रतिनिधि महिलाओं ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान नवलचन्द डागा के सहयोग से विशाल सचित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में गाय का महत्त्व बताने वाली वस्तुएँ भी प्रदर्शित की गई।

५. शिविर सम्पन्न- वैदिक धर्म की रक्षा में अहर्निश सेवारत गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में ७ अक्टूबर २०१४ को विजयादशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस शिविर का शुभारम २ अक्टूबर को ओ३म् ध्वजोत्तोलन द्वारा हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ़, ओड़िशा से २०० आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में उन्हें आत्मरक्षा के उपायों के साथ-साथ चरित्र निर्माण का भी प्रशिक्षण दिया। शिविर का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचार मन्त्री श्री चन्द्रदेव जी तथा आचार्य मुकेश जी ने दिया।

६. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज मगरा पूंजला, जोधपुर, राज. का ७८वाँ वार्षिक उत्सव वयोवृद्ध संरक्षक श्री जगदीश सिंह आर्य के सहयोग व निर्देशन में १० से १२ अक्टूबर २०१४ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें वैदिक विद्वान् पूज्य आचार्य इन्द्रदेव जी अधिष्ठाता वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली एवं भजनोपदेशक पण्डित सुमित्र आर्य सहारनपुर उत्तर प्रदेश से पधारे।

७. नामकरण संस्कार- आर्यसमाज जानापुर ता. बस्वकल्याण, जि. बिदर, कर्नाटक के मन्त्री श्री विजय कुमार जगताप के परिवार में इनके पौत्री का नामकरण संस्कार दि. १० अक्टूबर २०१४ को हुआ। हिन्दू महासभा के संघटक स्वामी सांख्यायन सरस्वती लक्ष्मी नगर दिल्ली का वैदिक प्रवचन, नामकरण संस्कार का महत्त्व के बारे में सविस्तार जानकारी दी गई।

thearyasamaj.org

८. छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह- मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्दन अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा दि. १२ अक्टूबर २०१४ को अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह का आयोजन ११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के छह विद्वान्-विदुषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल एवं ११-११ हजार रुपये की सम्मानित राशि प्रदान की गई। १. पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी (आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, हरि.) को श्री चौधरी रामपत आर्य ईस्माईला रोहतक हरि. स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। २. आचार्य वेदव्रत (श्रुति विज्ञान, आचार्यकुलम्, छपरा, शाहबाद, हरि.) को स्व. श्री पण्डित ऋषि बलदेव तिवाड़ी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। ३. आचार्या श्रीमती निर्मला जी (कन्या गुरुकुल मौर माजरा, पानीपत, हरि.) को श्रीमती लक्ष्मीदेवी, नौलथा, पानीपत, हरि. सम्मान से सम्मानित किया गया। ४. डॉ. अमीता आर्या (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फूले नगर, उ.प्र.) को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर, राज. स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। ५. श्री चन्द्रभूषण शास्त्री (अधिष्ठाता, गुरुकुल पौंधा, देहरादून, उत्तराखण्ड) को स्व. श्री मास्टर रतनसिंह जी सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। ६. स्नातिका डॉ. सुरभि आर्या (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फूले नगर, उ.प्र.) को श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवाड़ी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

९. वार्षिक उत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज मिश्रित, जनपद सीतापुर, उ.प्र. का वार्षिक उत्सव दि. २६ से २८ अक्टूबर २०१४ तक धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल देवयज्ञ किया गया जिसमें सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया तथा विद्वानों के प्रवचनों से प्रभावित होकर कई युवक-युवतियों ने दुर्व्यसनों को छोड़ने व यज्ञ करने का संकल्प लिया। इस सम्मेलन में बाल ब्रह्मचारी, संन्यासी स्वामी विश्वानन्द सरस्वती वैदिक गुरुकुल दखौला, जनपद मथुरा, उ.प्र. वैदिक विद्वान् कवि पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक आदि ने अपने पावन उपदेशों से जनता को लाभान्वित किया।

१०. वेद प्रचार- स्त्री आर्यसमाज श्रीगंगानगर में ७ से १४ सितम्बर २०१४ तक आयोजित वेद प्रचार एवं सामवेद पारायण यज्ञ में १३/९/१४ को सीकर के सांसद आर्यनेता स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती का स्वागत किया गया। सांसद ने कहा कि मैं सासंद बाद में पहले आर्य हूँ। आर्यसमाज वैदिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार का उत्तम माध्यम है। सामाजिक कुरीतियाँ दूर हों। आचार्या अन्नपूर्णा एवं पुष्पा शास्त्री ने ओजस्वी उद्बोधन से महिलाओं को प्रेरित किया।

११. बलिदान दिवस आयोजित- आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत, हरि. की ओर से २३ अक्टूबर २०१४ को प्रातः मुख्य बाजार, सेक्टर २३ में दीपावली पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३१वाँ बलिदान (निर्वाण) दिवस आयोजित किया गया। इस पुनीत अवसर पर आर्यजगत् के प्रख्यात् संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती-करनाल ने उपस्थित जनसमूह को ईश्वर और धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने-मानने के लिये आमन्त्रित और आह्वान किया। आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के प्रधान श्री रणधीरसिंह ढुल्ल ने सभी कार्यकर्त्ताओं, उपस्थित विद्वज्जनों, श्रोताओं, आयोजन में सहयोगी महानुभावों का धन्यवाद और आभार व्यक्त किया।

वैवाहिक

१२. वर चाहिये- पांचाल ब्राह्मण आयु ३१ वर्ष, कद ५ फुट ५ इंच, रंग गेहुआ, शिक्षा एम.ए., बी.एड. , हसनपुर, पलवल, हरि. युवती हेतु सजातीय सुशिक्षित समकक्ष युवक की आवश्यकता है।

सम्पर्क- ०९२५३१४३०६९

ई-मेल - nannuramdangi@gmail.com

१३. वर चाहिये- जन्म-३१/१०/१९८३, कद- ५ फुट १ इंच, रंग-गौरा, शिक्षा एम.ए. एम.एड., नेट, जे.आर.एच., पी.एच.डी., दिल्ली में चल रहा है, बिजनौर, उ.प्र. हेतु सुयोग्य आर्य विचारों वाला वर चाहिये।

सम्पर्क- ०९०२७३१८६७१

ई-मेल - vedkumarived@gmail.com

१४. वर चाहिये- नाम नीलम, कद- ५ फुट २ इंच, रंग-गेहुंआ, शिक्षा- एम.ए. एम.फिल., नेट, पी.एच.डी., दिल्ली सरकार में पी.जी.टी. सर्विस में है। नजफगढ़, नई दिल्ली. हेतु सुयोग्य आर्य विचारों वाला वर चाहिये।

सम्पर्क- ०११-६५८७९६५०

चुनाव समाचार

१५. आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गाँव, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री मा. सोमनाथ, **मन्त्री**- श्री प्रभुदयाल चुटानी, **कोषाध्यक्ष**- श्री नरवीरलाल चौधरी को चुना गया।

१६. आर्य कन्या गुरुकुल ट्रस्ट, हसनपुर, जि. पलवल, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री अमनसिंह शास्त्री, **मन्त्री**- श्री नन्नूराम डाँगी, **कोषाध्यक्ष**- कुमारी निशा को चुना गया।

१७. आर्य समाज मुम्बई, महा. के चुनाव में **प्रधान**- श्री देशबन्धु शर्मा, **मन्त्री**- श्री विजय गौतम, **कोषाध्यक्ष**- श्री किशनलाल महाजन को चुना गया।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ नवम्बर, २०१४ ३९५९/५९

ऋषि मेले की झलकियाँ

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट